।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द १९१,
सृष्टि सं.-१९६०८५३११५

वर्ष-13 / अंक-23 / चैत्र कृ. 10 से चैत्र शु. 11 सं. 2071 वि. / 16 से 31 मार्च 2015 / अमरोहा (उ.प्र.) / पृ.- 12 / प्रति- 5/-

होली मिलन समारोह में एमडीएच के स्वामी महाशय धर्मपाल जी, ब्रजमोहन मुंजाल, योगेश मुंजाल, सुरेश चन्द्र अग्रवाल व अन्य, साथ में कार्यक्रम की झलक-केसरी।

महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को घर-घर पहुंचाने का संकल्प

धूमधाम से मनाया आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह

विनय आर्य
दिल्ली।

भारतीय वैदिक परंपरा के अनुसार वैदिक पर्वों की श्रृंखला में नवसस्येष्टि वासंती पर्व (होलीकोत्सव) का विशेष महत्व है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में होली मंगल मिलन फाल्गुन पूर्णिमा वि.स. 2071 गुरुवार को सांयकालीन वेला में रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेंडरी स्कूल राजा बाजार कनाट प्लेस में उमंग व उत्साह पूर्वक मनाया गया। दिल्ली सभा द्वारा 13 वां आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह चंदन और पुष्प से होली कार्यक्रम का आयोजन किया गया ह्य जिसमें दिल्ली ही नहीं अपितु हरियाणा, उत्तर प्रदेश गुजरात सहित अनेक स्थानों के हजारों आर्यजनों ने भाग लिया। समारोह का शुभारंभ मेरठ से पधारे मूर्धन्य विद्वान् डॉ. वेदपाल जी के ब्रह्मत्व में आयोजित नवसस्येष्टि यज्ञ से किया गया। नवसस्येष्टि यज्ञ के महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे यज्ञों के आयोजन का वर्णन शास्त्रों में (इष्टि, सोम और चयन) तीन प्रकार से मिलता है। यजमान के रूप में सुरेश अग्रवाल व संतोष अग्रवाल शालीमार बाग, नितिन कुमार संगला व पायल यमुना विहार, विरेंद्र खट्टर व कृष्णा खट्टर (जनकपुरी), विजय आर्य व अनुपम आर्या दिव्य एवम श्रेयस गुलाटी, नरेश गुप्ता व ललतेश गुप्ता, राजेंद्र प्रसाद दुर्गा व उमा शशि दुर्गा तथा जितेंद्र आर्य व भीम सेन आर्य (सोनीपत) उपस्थित रहे।

तदुपरांत मुख्य मंच से आर्य विद्यालय की कन्याओं ने होली–आई गीत प्रस्तुत किया। कुमारी नंदिता व अभिनंदन द्वारा दिल्ली सभा द्वारा प्रारंभ की गई योजना घर–घर यज्ञ– हर घर यज्ञ पर सुंदर नाटिका प्रस्तुत की गई और मंच से यह आह्वान किया गया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने घर पर यज्ञ करना होगा और कम से कम एक साल में 12 परिवारों में यज्ञ कर आर्य समाज तथा महर्षि दयानंद के मंतव्यों को घर–घर तक पहुंचाएं। इस योजना के अंतर्गत दिल्ली सभा की ओर से पुरोहित की व्यवस्था की गई है जिसके अंतर्गत वर्ष में 12000 परिवारों को यज्ञ से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। समारोह के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.) मुख्यातिथि पद्मभूषण बृजमोहन मुंजाल एवं योगेश मुंजाल (हीरो होंडा ग्रुप) सुरेश चंद्र अग्रवाल (उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) डॉ. सुरेंद्र कुमार, कुलपति, गुरुकुल, कांगड़ी वि.विद्यालय, ठाकुर विक्रम सिंह, ओमप्रकाश सिंघल, विश्व हिन्दू परिषद करूणा प्रकाश राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, वि. अतिथि राकेश ग्रोवर राजेंद्र कुमार सीएमडी परिवार, हरीश बत्रा, डॉ. हर्षवर्धन केंद्रीय मंत्री (भारत सरकार) का शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पं. रामचन्द्र देहलवी की आवाज में प्रवचन की सीडी तथा उनके द्वारा लिखी गई पुस्तक शंका समाधान का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर दिल्ली सभा की ओर से स्व. ब्र. राजसिंह आर्य की स्मृति में जीवन पर्यन्त ब्रह्मचारी रहकर आर्य समाज के प्रचार प्रसार में सलंग्न महनुभाव को यह पुरस्कार प्रति वर्ष होली मंगल मिलन के अवसर पर प्रदान किए जाने की घोषणा की गई। इस वर्ष ब्र. राजसिंह आर्य प्रथम स्मृति पुरस्कार से ब्र. नंदकिशोर जी को स्मृति पत्र और 51.000–रुपये देकर सम्मानित किया गया।

दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने समारोह में उपस्थित विद्वान् अतिथिगण एवं समस्त आर्यजनों को होली की शुभकामनाएं दी और सबका हार्दिक धन्यवाद किया। इस अवसर पर डॉ. हर्ष वर्धन केंद्रीय मंत्री भारत सरकार ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि परिवार एवं संस्कृति के उच्च आदर्शों की पुनर्स्थापना और चेतना के लिए होली मंगल मिलन का यह समारोह अद्‌भुत है तथा घर–घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना महर्षि के स्वप्न को साकार करने का सुंदर कार्यक्रम है। महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि इसी प्रकार नई कल्याणकारी योजनाओं से ही होगा समाज का उत्थान। मंच संचालन कर रहे विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने होली मंगल मिलन की उपयोगिता एवं महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें अपने जीवन को यज्ञ से जोड़ना होगा और यहां प्रत्येक आगंतुक को कुछ संदेश लेकर जाना है। आर्य वीर दल कीर्ति नगर के आर्य वीरों द्वारा रंग दे बसंती, गीत के पश्चात शांतिपाठ के साथ समारोह का समापन हुआ। इस अवसर पर ऋषि लंगर की व्यवस्था महाशय धर्मपाल जी मैनेजिंग डारेक्टर एवं प्रधान एम.डी.एच आर्य

श्वेतकेतु बने हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य

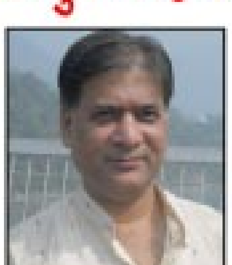

बरेली। वरिष्ठ आयुः चिकित्सक, संस्कृत निष्ठ विद्वान एवं विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक संस्थाओं से जुड़े आर्य समाज बिहारीपुर के मंत्री डॉ. श्वेत केतु शर्मा को भारत सरकार गृह मंत्रालय के द्वारा केन्द्रीय हिन्दी सलाहकार समिति का सदस्य मनोनीत किया है, डॉ. शर्मा का कार्यकाल तीन वर्ष रहेगा।

डॉ. शर्मा लगभग 26 वर्षो से समाज की विभिन्न रूपों में सामाजिक सेवा में संलग्न है। डॉ. शर्मा आकाशवाणी बरेली, रामपुर व दूरदर्शन बरेली, लखनऊ से चिकित्सा व सामाजिक वार्ताकार के रूप में जुड़े हुये हैं तथा 24 राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में अपने शोध पत्र पढ़ चुके हैं, कई शोध पत्र वाचन पर आपको सम्मानित भी किया जा चुका है। डा. शर्मा ने अभी तक पांच पुस्तकों का संपादन किया है तथा सात पुस्तकें आपकी अप्रकाशित हैं। रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग खोलने के लिये गत वर्ष आपने हिन्दी की दशा व दिशा कार्यक्रम का संयोजन व संचालन किया था, उसी के बाद कुलपति को ज्ञापन देकर हिन्दी विभाग खोलने की मुहिम प्रारम्भ की थी। डॉ. शर्मा ने शास्त्रार्थ महा सम्मेलन, महर्षि दयानन्द चौक की स्थापना, वृष्टियज्ञ से वर्ण का होना, वेद भारती स्मृति दिवस, शास्त्रार्थ शिरोमणि पुरस्कार महोत्सव, वेद विज्ञान संगोष्ठी आदि अनेकों आयोजन का संयोजन व संचालन भी किया है। ज्ञातव्य हो कि डॉ. शर्मा वेद विदुषी डॉ. सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्य आपके सुपुत्र हैं।

२२ को साधना का लोकार्पण

अमरोहा। हिन्दी साहित्य के चितेरे व सुप्रसिद्ध साहित्यकार पं. रघुनाथ प्रसाद साधक द्वारा विरचित साधना प्रबन्ध काव्य का लोकार्पण एवं साधक जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक विचार एवं कवि गोष्ठी का आयोजन 22 मार्च को सायं 7 बजे बड़ा बाजार स्थित खत्री धर्मशाला में होगा। यह जानकारी देते हुए पं. खेमकरण शर्मा ने साहित्य प्रेमियों से कार्यक्रम में सहभागिता की अपील की है।

राष्ट्रीय अधिवेशन २२ से

चित्रकूट। भारतीय इतिहास लेखन समिति का राष्ट्रीय अधिवेशन 22–23 मार्च को चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय में होगा। यह जानकारी समिति के पश्चिमी उत्तर प्रदेश के महामंत्री डॉ. विघ्नेश कुमार ने दी है।

जेल में बन्दियों को गर्म कपड़े वितरित करते पंजाबी जनसेवा समिति के पदाधिकारी- केसरी।

कारागृह में बन्दियों को बांटे स्वैटर व शॉलें

अर्जुनदेव चड्ढा ने किया अच्छे नागरिक बनने का आह्वान

दर्शन पिपलानी
कोटा।

नशा अपराधों की जड़ होता है, इसलिए हमें नशा-निषेध का संकल्प लेना चाहिए, तथा वेदों के 'मनुर्भव' अर्थात् 'मनुष्य बनो' के संकल्प को अपने जीवन में धारण करना चाहिए। ये विचार कोटा के कारागृह में पंजाबी जनसेवा समिति की ओर से पुरुष कैदियों को स्वैटर व महिला कैदियों को शॉल वितरित करने के बाद समिति एवं आर्य समाज जिला अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा ने कैदियों को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

उन्होंने आगे कहा कि मनुष्य वही है, जो मननशील व संस्कारवान होता है। इसलिए हमें श्रेष्ठ व बेहतर नागरिक बनना चाहिए और अपने जीवन में बुराइयों का परित्याग करना चाहिए। श्री चड्ढा ने कैदियों को सम्बोधित करते हुए आगे कहा कि आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समाज में व्याप्त छुआछूत, ऊंच-नीच, व कुरीतियों को जड़ से मिटाने के लिए एक जनान्दोलन चलाया। हमें इससे सीख लेते हुए ध्यान रखना चाहिए कि जाने-अनजाने में जो भी अपराध हमसे हुआ है, उससे अच्छा नागरिक बनने व सुधार करने का मार्ग प्रशस्त करें। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि अच्छा बनने की संभावनाएं सभी के पास सदैव विद्यमान रहती हैं।

इस अवसर पर कुछ कैदियों ने भी ईश्वर भक्ति के भजन व राष्ट्रभक्ति के गीत प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में समिति के महासचिव दर्शन पिपलानी, हरीश नागपाल, सागर पिपलानी, यशोदा निझावन व नीरू सहगल आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

गुधनी में समारोह पूर्वक हुआ वार्षिकोत्सव

राष्ट्रीय वेदप्रचारक संजीव आर्य रूप ने क्षेत्र भर में जगायी अलख

प्रज्ञा आर्या
बिल्सी (बदायूं)।

आर्य संस्कारशाला गुधनी का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में संस्कारशाला के बच्चों द्वारा सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। कु0 तृप्ति व कु0 साक्षी ने ईश-वन्दना की, और मुख्य अतिथि जितेन्द्र यादव एमएलसी ने दीप जलाए। सत्यम आर्य व बेटियों ने स्वागत गीत 'त्वं जीव शरदः शतम्' प्रस्तुत किया। पांच वर्ष से छोटे बच्चों ने 'नन्हा मुन्ना राही हूं' गीत पर सामूहिक अभिनय किया। 'देश के ही लिए जो जिए', 'होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से' गीतों का सामूहिक गान प्रस्तुत किया गया। महर्षि दयानन्द की झांकी तथा ऋषि कव्वाली खूब पसन्द की गयी। अनेक बच्चों ने योगासन भी किये।

वर्ष 2014 को स्वास्थ्य रक्षा वर्ष के रूप में मनाया गया। इस वर्ष हुई अनेक प्रतियोगिताओं के प्रतियोगियों को मुख्य अतिथि जितेन्द्र यादव द्वारा सम्मानित किया गया।

बच्चों को पुरस्कृत करते एमएलसी जितेन्द्र यादव- केसरी।

लगभग 125 बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर एमएलसी जितेन्द्र यादव ने कहा कि बिना संस्कारों की शिक्षा बेकार है। रावण शिक्षित था, किंतु संस्कारों से रहित था। संस्कारों के अभाव में ही बड़े पदों पर बैठे लोग भ्रष्टाचार करते हैं। आचार्य संजीव रूप 23 वर्षों से ग्राम में बच्चों को 'आर्य समाज' व 'संस्कारशाला' के माध्यम से संस्कार देकर राष्ट्र का महती कार्य कर रहे हैं। उन्होंने उत्सव में आए लगभग 600 से अधिक लोगों को आर्य समाज के साथ जुड़ने पर धन्यवाद दिया तथा गांव में कर्मशाला, नल व लाइट लगाने का वचन दिया।

इस अवसर पर बिल्सी के खाद व्यापारी अजीत सक्सैना सपरिवार, सोमेन्द्र सिंह प्रधान आर्य समाज बिल्सी; विशाल सिंह, रायपुर; सूरजपाल सिंह, रामजीमल शर्मा, प्रवीण श्रीवास्तव, अरुणा श्रीवास्तव, ओमप्रकाश सिंह, बद्रीप्रसाद आर्य, किशनपाल आर्य, लिटिल आर्य, प्रश्रय आर्य, अंशुल कुमार, रामसेवक, संजयसिंह, जगरपाल सिंह, प्रज्ञा आर्या, प्रेमवीर सिंह, पंकज चौधरी, शेखर सक्सेना, हिमांशु यादव, रोहित सक्सेना, धर्मेन्द्र प्रधान, ठाकुरदास शाक्य, रामचन्द्र, डॉ0 चन्द्रवोश, आदेश उपाध्याय, संतोष कुमारी आदि सहित भारी संख्या में लोग उपस्थित थे। संस्थापक आचार्य संजीव रूप ने व उमंग राज ने संयुक्त संचालन किया। अध्यक्षता वेदमुनि ने की। मंत्री अगरपाल सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया।

जेल में मंच पर उपस्थित आर्यगण- केसरी।

हर्षोल्लास के साथ ऋषि मेला सम्पन्न

राजीव आर्य
नई दिल्ली।

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से ऋषि बोधोत्सव एवं शिवरात्रि के अवसर पर विशाल ऋषि मेला 17 फरवरी को रामलीला मैदान (तुर्कमान गेट साइड) में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर खेल, भाषण प्रतियोगिताएं, विद्वत गोष्ठी मधुर भजन एवं संगीत, सार्वजनिक सभा व बच्चों द्वारा आकर्षक प्रस्तुतियां दी गयीं। कार्यक्रम में सुरेश ग्रोवर आर्य, वैदिक विद्वान पुरस्कार, डॉ0 मुमुक्षु आर्य माता विद्यावती महिला पुरस्कार, माता रुक्मणी देवी स्मृति पुरस्कार एवं माता छजिया देवी स्मृति पुरस्कार से आर्य विद्वानों को सम्मानित किया गया।

'सत्यार्थ प्रकाश' प्रकाशन से पूर्व कुछ विचारणीय बिन्दु

महोदय,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप सत्यार्थ प्रकाश का विशेष संस्करण छपवाने जा रहे हैं। सत्यार्थ प्रकाश के बारे में कुछ विद्वान निम्न लेखों पर आलोचना कर रहे हैं, इसलिए इन स्थानों पर पाद टिप्पणियां लिखने की आवश्यकता है, ताकि इसे पढ़ने वालों को इन स्थानों के बारे में कोई संकोच न हो।

(1) दूसरे समुल्लास में पैदा होने वाले बच्चे को धाई का दूध पिलाना लिखा है। परन्तु सब डाक्टरों का यह मानना है कि बच्चे को उसकी माता ही अपना दूध पिलाए, यही लाभकारी है।

(2) रोहतक का सन्त रामपाल नियोग विषय में महर्षि दयानन्द की बड़ी आलोचना करता रहा है। इसलिए उसमें यह टिप्पणी दी जाए- यह प्रथा सर्वसाधारण के लिए व्यावहारिक नहीं है। विधवा महिला अपनी इच्छा से पुनर्विवाह करवा ले, अथवा टेस्ट ट्यूब विधि से सन्तान उत्पन्न करवा ले (चतुर्थ समुल्लास)

(3) महर्षि दयानन्द जन्ममूलक जात-पात के विरोधी थे, इसलिए उन्होंने कर्म से वर्ण-व्यवस्था को माना था, परन्तु आजकल इसे लागू करना सम्भव नहीं। सब जातियों में कोई छोटी-बड़ी अथवा ऊंच-नीच नहीं है। किसी से पूछताछ नहीं करनी चाहिए।

-अश्विनी कुमार पाठक
सीट-33, नानकपुरा, नई दिल्ली (026871636)

: प्रवेश प्रारम्भ :

धनुर्वेद के महान आचार्य द्रोण की कर्मस्थली एवं अरावली की सुरम्य पर्वत श्रंखलाओं के मध्य सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय आचार्य राम किशोर 'मेधार्थी' के कुशल निर्देशन में आधुनिक एवं प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त गुरुकुल संचालित है। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही विद्यार्थी को कक्षा 3,4 व 5 में योग्यतानुसार प्रवेश दिया जा सकता है। यह संस्थान पूर्णत: आवासीय है।

समस्त अभिभावक बन्धु इसका लाभ उठाकर अपनी सन्तानों को सुशिक्षित, संस्कारवान, चरित्रवान एवं राष्ट्रभक्त बनाकर परिवार, समाज एवं राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

विशेष : प्रवेश हेतु आवेदन एवं विवरण पुस्तिका संस्थान कार्यालय से किसी भी कार्यदिवस में 100/- भुगतान कर प्राप्त की जा सकती है। स्थान रिक्त रहने तक ही विद्यार्थी प्रवेश पा सकता है।

सज्जन सिंह
संस्थापक
चलभाष : 09810545951
ई-मेल: yugjagrti.sajjansingh@gmail.com

आचार्य रामकिशोर मेधार्थी
कुलाधिपति/ प्राचार्य
चलभाष : 08750614501, 08126500672

युग-जागृति वैदिक गुरुकुल
गुरुग्राम (गुड़गांव) हरियाणा

जेएस कालेज में अखिल भारतीय सेमिनार सम्पन्न

मुख्य अतिथि टीएन चतुर्वेदी, मुख्य वक्ता वेदप्रताप वैदिक, व कुलपति प्रोफे0 मुशाहिद हुसैन सहित देश भर से पधारे विशिष्ट विद्वान

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं होनी चाहिए निजीकरण मुक्त

अमरोहा। जेएस हिंदू पीजी कालेज में आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय सेमिनार में शिक्षाविदों ने कहा कि भारत ही एक ऐसा देश है जहां चुनाव के दौरान सामूहिक नर संहार नहीं होता। मतदाता बड़ी आसानी से अपने मत का प्रयोग करते हैं। लेकिन साथ ही यह चिंता का विषय है कि सभी मतदान नहीं करते। लोकतंत्र के लिए यह मजाक है। शिक्षा अपनी मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए। बच्चों पर अंग्रेजी थोपना उचित नहीं है। बड़े-बड़े अस्पताल और निजी शिक्षण संस्थाएं पैसा कमाने की मशीनें बन गई हैं। इन पर अंकुश लगना चाहिए। जेएस हिंदू पीजी कालेज में शुक्रवार दो दिवसीय अखिल भारतीय सेमिनार आयोजित हुई। जिसका विषय था भारत में लोकतंत्र एवं विकास: चुनौतियां तथा अवसर।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कर्नाटक-केरल के पूर्व राज्यपाल टीन एन चतुर्वेदी ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर सेमिनार का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि प्राथमिक शिक्षा अपनी मातृभाषा में होनी चाहिए। भारत का संविधान बहुत लचीला है। इसमें सरकार को जरुरत के मुताबिक संशोधन करने का अधिकार है। लेकिन संविधान में मूल भावना आहत नहीं होनी चाहिए।

पीटीआई के पूर्व संपादक एवं भारतीय भाषा सम्मेलन के चेयरमैन डॉ0 वेद प्रताप सिंह वैदिक ने मुख्य वक्ता के रुप में बोलते हुए कहा कि भारत का लोकतंत्र आदर्श लोकतंत्र है। लोकतंत्र की जड़ें बहुत गहरी और मजबूत हैं। यहां सरकारें बदलने के बाद कोई विरोध नहीं होता। जबकि कई अन्य पड़ोसी देशों में सरकारों का तख्ता पलटने जैसी घटनाएं हो चुकी हैं। भारत विकास की ओर आगे बढ़ रहा है। लेकिन भारत में अभी तेजी से विकास की जरुरत है। हिंदी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में निजीकरण खत्म होना चाहिए।

एमजेपी रूहेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ0 मुशाहिद हुसैन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हायर एजुकेशन को गुणवत्ता युक्त बनाने पर जोर दिया जा रहा है।

विवि से ३०६ महाविद्यालय संचालित होते हैं, ६ लाख विद्यार्थी विवि द्वारा महाविद्यालयों में शिक्षण ग्रहण कर रहे हैं। जल्द ही बीस और महाविद्यालयों की स्थापना कराई जाएगी। कॉलेज प्राचार्य डॉ0 जेपी गुप्ता ने सभी का आभार प्रकट किया। सेमिनार संयोजक डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए। यहां, जयगोपाल माहेश्वरी, सुमत कुमार जैन, उच्चशिक्षा अधिकारी डॉ0 अलबेले सिंह, डॉ0 सुधांश शर्मा, डॉ0 निखिल दास, डॉ0 अवनीश मिश्रा, डॉ0 बीना रुस्तगी, संयुक्ता चौहान, डॉ0 वंदना गुप्ता, डॉ0 सीमा रानी गुप्ता, डॉ0 वीर वीरेंद्र सिंह, वीबी बरतिया, डॉ0 मनन कौशल, डॉ0 केके दीक्षित, डॉ0 पीसी शर्मा, डॉ0 आराधना कुमारी, डॉ0 हरेंद्र कुमार आदि मौजूद रहे।

सेमिनार के अवसर पर आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित हिन्दी के अग्रणी साहित्यकार व विद्वान प्रोफे0 विजय कुलश्रेष्ठ के हीरक जयन्ती उत्सव ग्रंथ, उनकी काव्य-कृति परिधियों के स्पर्श, यात्रा-यात्रा व अन्त: यात्रा का विमोचन करते हुए अतिथिगण -केसरी

मुख्य वक्ता ने कहा- संसद में हिंदी में बनने चाहिए कानून

वरिष्ठ पत्रकार डा. वेद प्रताप वैदिक ने लोकतंत्र पर कटाक्ष करते हुए कहा कि यह भारत की विडंबना है यहां संसद में कानून अंग्रेजी में बनते है। हिंदी में कानून नहीं बनते। जबकि अन्य देशों में अपनी मातृभाषा में कानून बनते हैं। कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को इस संबंध में पत्र भेजकर संसद में हिंदी में कानून बनाने की मांग की जाएगी। मातृभाषा को बढ़ावा मिलना चाहिए। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में निजीकरण खत्म होना चाहिए। उन्होंने कहा कि मैं पहला शख्स हूं जिसने राष्ट्रीय राजनीति विषय में पीएचडी में अपना शोध पत्र हिंदी में प्रस्तुत किया था। जबकि इसका काफी विरोध हुआ था।

सम्भल में होगा महासम्मेलन

सम्भल (साहू विजयपाल सरन)। आर्य उपप्रतिनिधि सभा, सम्भल के तत्वावधान में आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर एवं आर्य महासम्मेलन का आयोजन, आर्य समाज परिसर में 27 से 29 मार्च तक किया जाएगा। कार्यक्रम में जिन विद्वानों को आमंत्रित किया गया है, उनमें- स्वामी ब्रह्मानन्द वेदभिक्षु, बरेली; डॉ0 नरेन्द्र वेदालंकार, दिल्ली; जगत वर्मा भजनोपदेशक, पंजाब, घनश्याम प्रेमी भजनोपदेशक, मुजफ्फरनगर;, वीरेन्द्र रत्नम्, मेरठ; आचार्य जीवन सिंह, अलीगढ़. तथा हरिसिंह आर्य मुख्य शिक्षक- आर्य वीरदल एवं क्षेत्रीय उपदेशक गण सम्मिलित हैं।

आर्यों से एक निवेदन

एक श्रेष्ठ और सफल शिक्षक वही होता है, जो अपने छात्र/छात्राओं को पढ़ाने के लिए अपने साथ अच्छी शिक्षण सामग्री लेकर जाता है। छात्र/छात्रा ऐसे शिक्षक/शिक्षिका की बात ध्यान से सुनते भी हैं और ग्रहण भी करते हैं। आर्य समाज रूपी शिक्षक/ शिक्षिका के लिए लोगों को वैदिक ज्ञान प्रदान करने के लिए छ: प्रकार के वैदिक शिक्षण सामग्री, कलैण्डर के लिए ईमेल करें। ये सामग्री आपके ई-मेल पते पर भेज दिये जाएंगे, और आप अपने क्षेत्र से फ्लैक्स निकलवाकर प्रचार कर सकते हैं। घर में, आर्य समाज में, एवं सार्वजनिक स्थानों पर टांग सकते हैं। कलैण्डर निम्न हैं- ईश्वर के सौ नाम, यज्ञ विज्ञान, वैदिक संध्या विज्ञान, त्रैतवाद, ब्रह्मचक्र, तैंतीस कोटि के देवता। ये कलैण्डर बड़े आकर्षक हैं। जो ऐसा न कर सकें, वे सीधे 12/3, संविद नगर, इन्दौर (म0प्र0)- 452018 के पते पर मंगा सकते हैं। कृपया नीचे लिखे ई-मेल पर संपर्क करें- ramesh.bhat43@gmail.com

निवेदक- मंत्री, आर्यसमाज,रावतभाटा, वाया- कोटा (राज)- 323307

विशाल जत्थे ने किया टंकारा, अहमदाबाद, द्वारिका, पोरबन्दर व सोमनाथपुरी का परिभ्रमण

-यात्रियों का फल, फूल व मिष्ठान से किया भव्य स्वागत

-महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की जन्म भूमि का किया भ्रमण

अमरोहा। जेएस हिन्दू कालेज के राजनीति विज्ञान विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) के नेतृत्व में वेदप्रचार मण्डल का एक जत्था गुजरात स्थित महर्षि दयानन्द के जन्मस्थल टंकारा, अहमदाबाद, पोरबन्दर, द्वारिका, भेंट द्वारिका तथा सोमनाथ पुरी आदि के परिभ्रमण के लिए सात दिवसीय यात्रा पर गया। इस अवसर पर मॉस कम्यूनिकेशन के छात्रों ने भी सहभागिता की। वेद प्रचार मंडल का दल गुरुवार की सुबह शहर के रेलवे स्टेशन पर पहुंचा। यहां आर्य बंधुओं ने दल में शामिल सदस्यों का फल, फूल और मिष्ठान से भव्य स्वागत किया गया और दल को जेएस हिंदू डिग्री कालेज के एसोसिएट प्रोफेसर डा.अशोक कुमार रुस्तगी के नेतृत्व में आला हजरत एक्सप्रेस ट्रेन से टंकारा यात्रा के लिए रवाना किया गया। साबरमती आश्रम, अहमदाबाद, अक्षरधाम मंदिर, पोरबंदर, द्वारिका, भेंट द्वारिका व सोमनाथ मंदिर आदि दर्शनीय स्थलों की यात्रा करने के बाद दल १८ फरवरी को अमरोहा वापस लौटा। उपदेश विभाग के अधिष्ठाता हरिश्चंद आर्य ने बताया कि काठियावाड़ में जिसे मौखी के नाम से जाना जाता है, उनमें कई नगरों में एक टंकारा भी है। यहां राज महल के निकट जीवापुर में सामवेदी औदीत्य ब्राह्मण कर्शन लाल तिवारी के परिवार में १२ फरवरी १८२५ को एक पुत्र ने जन्म लिया था।

ज्ञातव्य है कि बाल्यकाल के यही मूलशंकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए, जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व में एक अभूतपूर्व क्रान्ति को जन्म दिया। यात्रियों को अमरोहा रेलवे स्टेशन पर विनय प्रकाश आर्य, मंगूसिंह आर्य, तेजपाल आर्य, हरिओम अग्रवाल, एनके गर्ग, हेतराम सागर, राजनाथ गोयल, उषा आर्या, अंजू आर्या, ऋषिपाल सिंह आदि ने विदाई दी।

आओ करें गो संवर्द्धन

आज भारत वर्ष में ही प्यारी गाएं जिस दुर्दशा को प्राप्त हैं, वह किसी से छिपी नहीं है। दूध और दही की नदियां बहती थीं, वह जमाना तो गत युग की बात हो गयी, परन्तु हमें और हमारे बाल-बच्चों की औसत आधी छटांक दूध भी मिलना आज महाकठिन हो रहा है- धारोष्ण दूध की तो बात तो अलग ही है। इसी के अभाव से हमारे शक्ति-मामर्थ्य और धन-धर्म की जो हानि हो रही है, वह प्रत्यक्ष है, परन्तु यह दोष किसका है?

इस प्रश्न का उत्तर कई प्रकार से दिया जा सकता है। पर प्रधान बात यह है कि प्रत्येक गृहस्थ ने गाय पालना छोड़ दिया है। वह भावना ही प्रायः धार्मिक लोगों के दिलों से निकलती जा रही है कि सुबह ही उठकर गाय के दर्शन करना और हमारे आंगन में उसका गोधर, मूत्र गिरना बड़ा ही शुभ है। इधर गोरक्षा की तरफ ऐसी उदासीनता हुई और उधर गोवंश का लगातार कटना बढ़ता ही गया। परिणाम यह हुआ कि आज दूध शीशियों में दवा की तरह मिलने की नौबत आ गयी है। यदि यही हाल रहा, तो हमारे स्वास्थ्य, शक्ति, सामर्थ्य, कृषि, वाणिज्य और धन-धर्म की महान हानि होते हुए हमारा जीवन भी कालकवलित हो जाएगा। इसे सूक्ष्म रूप से विचार कर देख लीजिए, नतीजा यही सामने आएगा।

अतः अब प्रत्येक गृहस्थ के लिए गौ पालना अत्यंत आवश्यक हो गया है। धार्मिक दृष्टि से भी यह जरूरी और आर्थिक दृष्टि से भी लाभदायक। यहां केवल आर्थिक लाभ की दृष्टि से इस पर विचार कीजिए, तो गोपालन एक रोजी, और गृहस्थ पालन का प्रधान, स्वतंत्र और आवश्यक जरिया मालूम होगा।

आजकल प्रायः दो प्रकार के भयों से लोग गाय नहीं पालते- प्रथम तो झंझट व दूसरा बाजार से दूध खरीदने की अपेक्षा गाय का पालना महंगा पड़ेगा। परन्तु विचारपूर्वक देखा जाए तो ये दोनों बातें निर्मूल हैं। किसी भी प्रान्त के निवासी वहां की दर से चारे-दाने का खर्च लगावें, और उस खर्च के मुकाबले में अपने घर की गाय के असली दूध का, उपलों का, उसके बैल-बछियां बेचने की आमदनी का, मक्खन, मठा, घृत आदि का मूल्य जोड़कर हिसाब लगावें, तो व्यय की अपेक्षा आय ही अधिक बढ़ेगी। इस आय से गृहस्थी के पालन-पोषण में एक खास सहायता मिल सकती है। आज भी हम देखते हैं कि कई व्यक्ति, कृषक और खास-खास गोपालक जातियां इसकी आय से घर-गृहस्थी का काम चलाती हैं। गोपालन के लिए सरकार द्वारा भी कामधेनु, मिनी कामधेनु योजनाएं भी गाय पालने वालों के लिए एक सुखद बात है।

जनवाणी

कब लड़ेंगे भ्रष्टाचार से

महोदय,

आज अगर बात समाज के बढ़ते हुस अपराधों की करें, तो आज सबसे ज्यादा अपराध हमारे भारत देश में पनप रहा है। आज नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाले शिक्षक खुद ही छात्र- छात्राओं का ह्रास कर रहे हैं तथा उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। दूसरी ओर सामाजिकता को सिखाने वाले नेता अपने फायदे के लिए मनुष्यों का आपस में लड़वाते हैं। भाई- भाई आज एक- दूसरे की जान का दुश्मन बन गया है, वजह जरा से हिस्से तथा बंटवारे के लिए वह यह भी भूल जाते हैं कि उनका एक- दूसरे के साथ क्या संबन्ध है। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोग अपने बच्चों को उचित शिक्षा नहीं दिला पाते, जिस कारण उनके बच्चे गलत संगठन में पड़कर चोर, डाकू, क्रिमिनल, आतंकवादी आदि बन जाते हैं, जिससे उनका भविष्य या तो पुलिस की गोली होता है या फिर तिहाड़ जेल। आखिर कब तक ये अपराध । समाज में यूं ही बढ़ते रहेंगे। क्या इनका कोई अन्त है? क्या इन सबके लिए भ्रष्ट नेता, मंत्री, भ्रष्ट प्रशासन या फिर समाज में रह रहे वही ऊँचे दर्जे के लोग जिम्मेदार हैं जो उने सामने ऐसी प्रवृत्ति रखते हैं, जिससे आये दिन एक नया अपराध जन्म लेता है। इनको रोकने के लिए हमारे देश की सरकार को कुछ नये कदम उठाने चाहिए। एक व्यक्ति अपराधी तभी बनता है, जब उसके सामने कोई मजबूरी हो। मजबूरी उसकी गरीबी व निम्न दशा से पनपती है। जब किसी व्यक्ति को उसके लायक कोई रोजगार नहीं मिल पाता, तो वह अपने व अपने परिवार के दायित्वों की पूर्ति नहीं कर पाता। इसी कश्मकश में वह मानसिक व्याधिक का शिकार हो जाता है। अब उसके सामने और कोई विकल्प नहीं रह जाता, तब वह गलत तरीके से ही पैसा कमाने की होड़ में लग जाता है। सरकार को निर्धन व्यक्तियों के लिए स्वरोजगार प्रदान करने चाहिए। समाज से भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने का प्रयास करना चाहिए। तभी हमारे समाज से अपराध मिटेंगे।

अमित कुमार
अकबरपुर पट्टी, अमरोहा

महर्षि दयानन्द सरस्वती का आत्मिक दर्द

पं0 उम्मेद सिंह विशारद

जन साधारण का विचार है कि परमात्मा अवतार धारण करके पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। यह अज्ञान है, क्योंकि अजन्मा, अव्यय, निराकार, सृष्टिकर्ता ईश्वर साकार कैसे हो सकता है। किंतु यह भी सत्य है कि मोक्ष से लौटकर मुक्त आत्मा अधर्म का नाश करने के लिए संसार में जन्म लेती है। संसार में मुख्य जन्म दो प्रकार का होता है। एक कर्मबद्ध जीवन, और दूसरा कर्मो के बन्धनों से मुक्त जीवन। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगीराज श्रीकृष्ण में, व महर्षि दयानन्द सरस्वती में अन्तर था, तो यह कि श्रीराम व श्रीकृष्ण जीवन भर सत्य के लिए लड़े, कामनाओं के लिए लड़े, तथा महर्षि दयानन्द ऋत सत्य व निष्काम के लिए लड़े व मरे। यह विचारणीय बात है। इस लेख में मैंने महर्षि दयानन्द जी के कुछ आत्मीय दर्दो का उल्लेख किया है। सुधी पाठक इससे प्रेरणा लेंगे।

नरबलि अंधविश्वास का दर्द :

महर्षि दयानन्द कहते हैं कि एक दिन की घटना को मैं भूल नहीं सकता। शाम होने वाली थी सामने नदी थी और अमावश की रात आने वाली थी। सोचा रात किसी रूप में बिताऊं। इतने में दूर से आवाजें आ रही थीं, एक दस वर्ष के बालक को लोग नहला रहे थे, और स्त्री-पुरुष नाच रहे थे। मैं जिज्ञासावश वहां पहुंचा। पता चला कि आज अमावश है, और महाकाली की गुफा में मध्य रात्रि को इस बालक की बलि दी जाएगी। इसके माता-पिता का वंश धन्य हो जाएगा और इसके पिता को पुजारियों ने पचास रुपये दिये थे। मान्यता यह थी कि यह बालक देह छोड़कर गन्धर्व लोक चला जाएगा।

इस बात को सुनकर मेरे मन में तीन चिन्ताएं हुईं-

1- मेरी माता ने मुझ पुत्र को खोकर ही देहत्याग किया था। यह माता अपने बालक का बलिदान कर कैसे जीवित रहेगी? 2- इस महापाप के दण्डभोग के लिए ही हमारी पुण्यभूमि धीरे-धीरे विदेशी वणिकों के कंवल में जा रही है। 3- धर्म के नाम पर ऐसे महापाप ऋषि-मुनियों के देश में कैसे चालू हो गये।

यह काल भैरव मन्दिर फतेहपुर के धर्मपुरी पुनघाट में स्थित है। इस शोभायात्रा में मैं भी चलने लगा। अवसर देखकर पुरोहित से कहा कि इस बालक को छोड़ दो और मेरी बलि दे दो। मैं भी ब्राह्मण पुत्र हूं। पुजारी बोले7 बड़े पुजारी की आज्ञा से ही विचार किया जा सकता है। वहां भयंकर भीड़ थी, पचास आदमी नंगी कटार लेकर नाच रहे थे। मेरी प्रार्थना स्वीकार हो गयी। मुझे नहलाकर कुमकुम लगाया गया। खड्ग की पूजा हुई। काल भैरव के सम्मुख काठ की वेदी में मेरा सिर रखकर पुरोहित पाठ करने लगे। चारों ओर काल भैरव की जय के नारे लगने लगे। मैं चारों ओर देखकर मरने के लिए तैयार हो गया। पुरोहित के कान में मुंह लगाकर मंत्रपाठ किया, और खड्ग घातक के हाथों में दे दिया। मेरी आंखों में कसकर पट्टी बांधी गयी, बस बलिदान बाकी था।

लेकिन अचानक बन्दूक की तीन गोलियों की आवाज आयी। साथ ही लोग भागने लगे। चिल्लाकर कहने लगे- मरहटी फौज आ गयी है। सभी भाग गये। मैं अकेला बलिदान लकड़ से बंधा रह गया। उसी समय सिपाहियों ने मुझे मुक्त कर दिया। पता चला कि महाराष्ट्र सरकार ने बलिप्रथा पर प्रतिबन्ध लगा रखा है और यह अमावस्या में मन्दिरों में भ्रमण करते हैं। मैंने ईश्वर से कहा कि हे प्रभु मुझसे क्या कराना चाहते हैं, जो कि आप बार-बार मुझे प्राण दे रहे हैं?

गंगा किनारे घटिया घाट की घटना का दर्द :

महर्षि दयानन्द एक बार फर्रुखाबाद के निकट घटिया घाट के किनारे ध्यान मग्न थे। उसी समय एक स्त्री अपने मरे हुए बच्चे को लेकर आयी और उसने अपने उस मरे हुए बच्चे को पानी में डाल दिया। छपाक की आवाज से महर्षि का ध्यान उस ओर गया, और देखा कि वह स्त्री बच्चे का कफन उतार रही है। कफन उतारकर चलने लगी, तो महर्षि ने हाथ जोड़कर कहा कि मां गंगा में क्या डाल दिया? उस स्त्री ने रोते हुए कहा कि यह मेरा लड़का है। मैं विधवा स्त्री हूं, निर्धन हूं। धनाभाव से इसका इलाज न करा सकी। महर्षि ने कहा जिस ईश्वर ने दुख दिया, वही सुख भी देगा। परन्तु आपने कफन क्यों उतारा है? स्त्री ने कहा मैं निर्धन हूं, कफन के लिए मेरे पास धन नहीं था। इसलिए अपनी साड़ी को आधा फाड़कर कफन बना लिया था। मैंने सोचा बच्चा तो वापस आएगा नहीं, मुझे तो यहीं रहना है, तो समाज में नग्न कैसे रहूंगी। इसलिए मैंने कफन उतार लिया। इसे फिर से साड़ी से जोड़ दूंगी। ऋषिवर का हृदय द्रवित हो गया, आंखों में आंसू बह निकले। पता चलता है कि ऋषि के दिल में देश व समाज के प्रति कितनी वेदना थी।

एक हूक सी दिल में उठती है,
एक दर्द जिगर में होता है।
हम रात को उठकर रोते हैं,
जब सारा आलम सोता है।।

मान्य पाठक! हम ऋषि के किस-किस दर्द की बात करें, वह तो पूर्ण रूप से दर्द निवारक देवता थे। एक छोटे-से दर्द का वर्णन और करते हैं-

कोढ़ी को उठाना और उसका दर्द समझना :

गुजरात के सोमनाथ मन्दिर में मेला लगा हुआ था। मेले के बाहर एक कोढ़ी पड़ा हुआ था। कोई कहता था मर गया, कोई कहता जिन्दा है। पता चला कि पुलिस ने मारते-मारते बाहर निकाल दिया है। और कोई कहता कि पैरों में रस्सी डालकर बाहर नदी किनारे छोड़ दो। मैंने समझ लिया, यह आदमी अभी जिन्दा है। इसके सारे शरीर में खून और पीप निकल रहा था। इसीलिए किसी ने सहायता नहीं दी। मैंने कपड़ा भिगोकर उसके मुंह में पानी डाला, तब उसने आंखें खोल दी थीं। तब तक पुलिस भी पहुंच गयी थी। मैंने कहा मेले में चिकित्सा व्यवस्था कहां है? उसको छोड़कर जाना भी ठीक नहीं था। मैंने "सहोसि सहो मयि देहि" मंत्र बोलकर कोढ़ी को पीठ के ऊपर उठाकर चिकित्सा केन्द्र में भर्ती करवा दिया। विदाई के समय उसने कहा- बाबा मुझे मरने का आशीर्वाद दो। और उसने देह छोड़ दिया। मैंने नदी में स्नान किया, और योग-गुरुओं की खोज में निकल पड़ा।

महर्षि के अन्य दर्दो का संकेत :

मैंने छोटे-छोटे उदाहरण दिये हैं। महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण जीवन का दर्द तो सत्य की स्थापना करना था। उन्होंने ईश्वर के सत्य के दर्शन कराये। उन्होंने पंच महायज्ञ के सत्य का ज्ञान कराया। उन्होंने जो मान्यताएं व कर्म मानव समाज को भयंकर हानि पहुंचाते थे, उस दर्द को समझा। जैसे ईश्वर के नाम पर पशुबलि, जाति-पाति का छुआछूत का चलन, सती होने की कुप्रथा, विधवा का अभिशाप, कपोल कल्पित पौराणिक अवैदिक अनार्ष ग्रन्थों से मानव मात्र को हानि, मृतक भोज, काल्पनिक देवी-देवताओं की पूजा, राष्ट्र की परतंत्रता का कारण माना। और जिन अनेक कुप्रथाओं द्वारा समाज खोखला होता जा रहा था, उस दर्द को समझा व उसका निराकरण भी किया।

युगों बाद धरती पर ऐसे महापुरुषों का आगमन होता है। तभी तो टंकारा की शिवरात्रि बोधरात्रि बन गयी, जिसने सारे संसार का अंधकार ही मिटा दिया। उस देवता ने एक निरंतर ऋत सत्य का प्रचार करने हेतु आर्य समाज जैसे सर्वोच्च संगठन का गठन किया। धन्य हो ऋषि दयानन्द। आपने अपने को बार-बार विष देने वालों को भी क्षमा करते हुए उनके दर्दो को समझकर ऋत सत्य के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

गढ़ निवास, मोहकमपुर
देहरादून (9411512019)

हमारे परिवार आर्य कैसे बनें?

अश्विनी कुमार पाठक

आजकल अधिकांश आर्य सदस्यों के परिवार अर्थात् पत्नी, पुत्र तथा पुत्रियां आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों तथा अन्य उत्सवों में नहीं आते–जाते। देखने में यह आया है कि पत्नियां पौराणिक पाखण्ड और अंधविश्वास में फंसी हुई हैं अथवा राधा स्वामी, ब्रह्माकुमारी मतों के गुरूओं को मानती है तथा पुत्र–पुत्रियां पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण कर रही है। इसलिये आर्य समाजों में बहुत कम आती हैं। वास्तव में हमने महर्षि दयानन्द के कहने के अनुकूल आचरण नहीं किया। उन्होंने 31 दिसम्बर 1880 को आर्य समाज मुलतान के मंत्री मास्टर दयाराम वर्मा को एक पत्र में यह लिखा था कि जनगणना में धर्म के खाने में वैदिक धर्म और जाति के खाने में आर्य लिखाया जाए और पंजाब में सब आर्य समाजों को यह बता दिया जाये परन्तु अधिकांश आर्य समाजियों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया और अब तक धर्म के खाने में हिन्दू ही लिखते आ रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभाओं ने भी इस ओर ध्यान नहीं दिया जबकि इस बारे में तो खूब प्रचार होना चाहिये था। आर्य लोग वैदिक धर्म की जय के नारे तो खूब लगाते हैं परन्तु इसका अस्तित्व कागज पत्रों में नहीं है। अगर वैदिक धर्म लिखवाते तो हमारा परिवार अपने आपको वैदिक धर्मी ही कहते और उन पर वैदिक सिद्धांतों का कुछ तो प्रभाव पड़ता। जिस तरह एक ईसाई, मुसलमान की संतान भी अपने पिता के अनुकूल ही होती है यह ठीक है कि हिन्दुओं से अलग नहीं है कि हम हिन्दुओं से अलग नहीं है इसलिये हिन्दुस्तान के निवासी होने से हिन्दू कहलाते हैं। यह प्रचार सार्वदेशिक सभा तथा प्रादेशीय प्रतिनिधि सभाओं द्वारा होना चाहिए कि सभी आर्य सदस्य सरकारी तथा अन्य सभी फार्मों में धर्म के खाने में वैदिक धर्म लिखायें। दूसरी बात महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि के गृहस्थाश्रम संस्कार में यह लिखी है कि अपने घरों में प्रातः व सांय संध्या तथा हवन किया करें।

उपरोक्त दो बातों के अतिरिक्त सभी आर्य जन अपनी सन्तानों के विवाह गुण–कर्मानुसार जन्म जाति का विचार किये बिना आर्य विचारधारा के लोगों के साथ किया करें। तभी हमारे परिवार आर्य बन सकते हैं। चौथी बात यह करें कि अपने जिन पुत्र–पुत्रियों की आयु 18 वर्ष से ऊपर हो चुकी है, आर्य समाज के सदस्य बनायें तथा सबकी पत्नियां आर्य स्त्री समाज की सदस्य बनें तथा उनको सत्संग में ले जाया करें।

आजकल हमारी पुत्रियां विवाह के पश्चात् पौराणिक घरों में जा रही हैं और हमारे पुत्रों के विवाह भी पौराणिक विचारधारा के घरों में हो रहे हैं इसलिये परिवार आर्य नहीं बन रहे और आर्य समाज की उन्नति नहीं हो रही। मेरा विश्वास है कि उपरोक्त चार बातों के अनुकूल आचरण करने से हमारे परिवार आर्य समाजों में आने लगेंगें और वैदिक धर्म अस्तित्व में आ जाएगा।

जो अपने घर में किसी कारण से हवन न कर सकते हों, उन्हें अन्तिम दिन आर्य समाज के सत्संग में जाना चाहिए। सब आर्य समाजों में प्रातः–सांय दोनों समय सत्संग होना चाहिए। हवन एक ही समय कर सकते हैं। सब प्रदेशों की प्रतिनिधि सभायें आर्य समाजों को यह निर्देश दें। ऐसा मेरा सुझाव है। हिन्दू कोई धर्म नहीं है, हमारा प्राचीन नाम आर्य है। हिन्दू नाम विदेशियों का दिया हुआ है। परन्तु कोई इसे छोड़ना नहीं चाहता। यह चार लाईन सब याद रखें।

आर्य हमारा नाम है वैदिक
हमारा धर्म। ओम हमारा ईश है
यज्ञ योग हमारा कर्म।।
सत्य हमारा लक्ष्य है गायत्री
महामंत्र। भारत हमारा देश है
सदा रहे स्वतंत्र।।

–सी–233 नानकपुरा,
साउथ मोतीबाग,
नई दिल्ली–10021
दूरभाष–011–26871636

ऐसे होते हैं आर्य

बात सन् 1960 के दशक की है मेरे पूज्य पिता जी वैद्य जगदीश शरण आर्य सम्भल के लब्ध प्रतिष्ठित वैद्यों में से थे। कोई भी ऋतु हो उनका दैनिक क्रम था कि वह अपनी वैद्यक की दुकान पर यज्ञ करके ही जाया करते थे। सर्वे भवन्तु सुखिनः को यथार्थ रूप देते हुए वह दिन निकलते ही दुकान पर मरीजों के बीच जा बैठते और आयुर्वेदिक व यूनानी औषधियों द्वारा चिकित्सा कार्य आरम्भ कर देते थे। जबकि अन्य डॉक्टर हकीम प्रातः 10 बजे के बाद ही पहुंचते थे। हमने अपनी नादानी से जब उनसे दुकान पर अन्य चिकित्सकों की भांति देर से जाने को कहा तो उन्होंने उत्तर दिया– चिकित्सा मेरा व्यवसाय नहीं है, धर्म है। हो सकता है बहुत से रोगी रात भर अपनी पीड़ा से दुःखी रहे हों और प्रातः काल होने की प्रतीक्षा कर रहे हों। यह तो सामाजिक सर्वहितकारी कार्य है जो आर्य समाज के दसवें नियम के अन्तर्गत परतन्त्र हूं।ॅन्य है ऐसे महामनीषी आर्य चिकित्सक।

–डॉ0 सत्यदेव
आजाद (सुपुत्र)
आकाशवाणी, मथुरा

ऐसे होते हैं आर्य

आप हैं माननीय संस्थापक/ प्रबन्धक महोदय श्री ठाकुर जी महाराज उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिमरिया रायपुर जनपद–शाहजहांपुर (उ0प्र0) पूर्व जिला पंचायत सदस्य व ग्राम प्रधान व आर्यसमाज तिलहर के सम्मानित सदस्य शिवराम सिंह आर्य।

आपने शिक्षण–प्रशिक्षण के बाद पूरी तन्मयता से समाज सेवा कुरीतियों के निवारण एवं दुर्व्यसनों से बचाव, दलितों, बेसहारा लोगों को तन–मन–धन से सहयोग प्रदान कर उनके दिलों में ऐसे बसे कि आपको 1989 से 2010 तक ग्राम सभा का प्रधान बनाया। सन् 2000 से 2005 में महिला सीट आरक्षित होने पर आपकी ध र्म पत्नी सुशीला देवी को ग्राम सभा का प्रधान बनाया और स्वयं जिला पंचायत सदस्य पद को भारी बहुमत से जनता ने विजयी बनाया।

तात्पर्य आप धर्मनिष्ठ पूर्ण वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत पूरा परिवार वैदिक आदर्श परिवार के प्रतीक है। आपकी सत्य निष्ठा ने ही समाज के सबसे श्रेष्ठ लोगों में उच्चस्थान व सम्मान प्राप्त किया है। आज भी 59 वर्ष की आयु में अपने विद्यालय में एक घंटा वैदिक साहित्य का अध्यापन कार्य करते हैं। विद्यार्थियों को आर्यसमाज से जुड़ने की प्रेरणा भी देते हैं। मैं आपके जीवन से लम्बे समय से जुड़ा हूँ। ईश्वर आपको दीर्घ आयुष्य प्रदान करें।

–डॉ0 रामशरण लाल आर्य
राम नगर

अनुव्रतः पितुः पुत्रों (पुत्र पिता के अनुर्व्रती हो)

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

अथर्व वेद के मन्त्र का यह एक चतुर्थांश है आर्य समाज के उपदेशक अपने प्रवचनों में प्रायः उपदेश देते हुए इस वाक्य से समझाते हैं कि हमारा परिवार वैदिक परम्पराओं से युक्त हो। अथर्ववेद में ऐसे सुन्दर परिवार बनाने के लिए प्रत्येक भाई के लिए, प्रत्येक बहन के लिए, प्रत्येक पति–पत्नी के लिए, प्रत्येक पिता पुत्र के लिये यह संदेश है किसी के साथ कोई भेद भाव अथवा पक्षपात् की भावना देश काल के आधार पर नहीं गरीबी–अमीरी या जात–बिरादरी विशेष के लिए नहीं। वर्तमान में किसी राजनैतिक की बात नहीं, कोई प्रान्तवाद भी नहीं है। सभी मानव मात्र को यह सन्देश है। सभी ग्रन्थ और सम्प्रदाय इस बात को स्वीकार करते हैं और इसी प्रकार का परिवार बनाना चाहते हैं क्योंकि यह वाणी वेद वाणी है जो परमात्मा प्रदत्त है इस ज्ञान सागर में जो भी गोता लगायेगा वहीं सुखी जीवन जीने का अधिकारी बनेगा आवश्यकता इस बात की है कि आप किसी भी माध्यम से अपने मन को शिव संकल्प के साथ तैयार करें। अपनी मानसिक चेतना को परिवार के प्रति समर्पित करें। अपने लक्ष्य को निर्धारित करें। प्रतिदिन प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त में जैसा कि मनुस्मृति में आया है– **ब्राह्मेमुहूर्ते बुध्यते धर्मार्थो चानु चिन्तयेत्। काय क्लेशांच् तन्मूलान् वेदतत्वार्थ मेव च।।**

प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में उठकर आप अपना आत्म निरीक्षण प्रारम्भ करें कि मेरे जीवन में क्या न्यूनता रह गई है। जो परिवार अभी मेरे अनुकुल नहीं हो पा रहा है। मुझे क्रोध, आलस्य, प्रमाद जैसे दुर्गुणों ने अपना दास तो नहीं बना लिया है। स्वास्थ्य ठीक है फिर दिनचर्या में धार्मिक वातावरण तैयार करने के लिए स्वयं कितना समय दे पा रहा हूं। जैसे परीक्षा काल में छात्र परीक्षा की तैयारी करता है याद किया हुआ पाठ पुनः स्मरण करना है जो याद नहीं है उसे स्मरण करता है। प्रतिदिन के अभ्यास से छात्र निश्चिन्त होकर परीक्षा में निर्भय रहता है और अच्छे अंक प्राप्त करके स्वयं प्रसन्न होता है तथा परिवार के सदस्यों एवं अपने गुरूजनों को भी प्रसन्न करता है इसी प्रकार वह व्यक्ति जो अपने परिवार को अपने अनुकूल परम्परा से रखना चाहता है उसके लिए भी इतनी तन्मयता–सावधानी–समर्पण एवं प्रतिदिन अभ्यास की आवश्यकता है।

प्रायः हमारी सभी की भावना तो रहती है कि मेरा परिवार अच्छा हो तो व्यवहारिक रूप में जब तक आचरण नहीं करेगें तब तक हम उसका पूरा लाभ नहीं उठा सकेगें। वेद की शिक्षा के प्रति विश्वास भी तभी प्राप्त कर सकेंगे। विश्वास के पश्चात ही उसमें श्रद्धा–आस्था हो पाती है तभी वह उत्साहित होकर निष्ठा से कार्य करता है। प्रत्येक व्यक्ति परिणाम चाहता है पुरूषार्थ करना नहीं चाहता। इसलिये आज हमारे परिवार टूटते जा रहे हैं पुरानी पीढ़ी के लोग सामूहिक परिवारों में रहकर उन्नति करते थे सभी प्रसन्न एवं निश्चिन्त रहते हुए अपने पुत्रों का चरित्र निर्माण करके अपने पितृ ऋण से मुक्त होने का प्रयास चलता रहता था। आज हमारी यह पुरातन परम्परा का लोप हो रहा है जिसका दुष्परिणाम समक्ष है। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ''वेदों की ओर लौटो'' का नारा देकर यही बताने का प्रयास किया था कि वेद सृष्टि के आदि में परमात्मा ने ऋषियों के माध्यम से जो ज्ञान दिया है वह मानव मान के कल्याण के लिए है उसमें हम किसी भी वर्गवाद में आकर यदि इस मार्ग से द्वेष करते हैं तो स्वयं अपनी ही हानि है।

''नान्यः पन्थाः विधतेडमानाय'' अतः स्वयं को सुखी बनाने के लिए वेदानुकूल जीवन जीने का संकल्प लें।

मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा
उ0प्र0, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ
गढ़मुक्टेश्वर–हापुड़ (उ0प्र0)
मो0नं0–9837402192

ग्रेटर नोएडा निवासी
कर्मठ व्यक्तित्व
वीरेश आर्य
मंगल कामनाएं
सुमन कुमार वैदिक

आर्य समाज, ग्रेटर नोएडा, उ.प्र. के कर्मठ सदस्य नवयुवक वीरेश आर्य (निवासी ग्राम मकोड़ा) अपने सहयोगी बिजेन्द्र आर्य 'आर्यदीप', मांगेराम आर्य एवं अन्य पदाधिकारियों के साथ मिलकर आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार में लगे हैं। आपने यज्ञों की धूम मचा रखी है। आपके द्वारा एक गुरूकुल की स्थापना भी की गयी है। इस उम्र में ऋषि के मिशन को आगे बढ़ाने में आपका उत्साह देखते ही बनता है। हार्दिक शुभकामनाएं।

गाय, गंगा, गायत्री की अन्यों से विशेष मान्यता क्यों?

खुशहालचन्द्र आर्य

गाय, गंगा, गायत्री ये तीनों अपने–अपने स्थान पर सबसे श्रेष्ठ, सर्वोत्तम व सर्वोच्च है। इनको हिन्दू धर्म यानि वैदिक धर्म में बहुत बड़ा महत्व ही नहीं बल्कि पूज्य माना गया है। हिन्दू धर्म ने जिन–जिन को मान्यता दी है, वह उनके गुणों व उसके महत्व को देखकर दी है। जैसे वृक्षों में पीपल, पौधों में तुलसी, पशुओं में गाय, पक्षियों में हंस, पहाड़ों में हिमालय, नदियों में गंगा, वैदिक मंत्रों में गायत्री। इन सबके पीछे इनके गुणों का इतिहास छिपा है। हम यहां केवल गाय, व गायत्री की मान्यता क्यों है, इसका संक्षिप्त वर्णन करते हैं।

1. गाय– गाय को ईश्वर ने मनुष्य जाति को एक पशु के रूप में जैसे अन्य पशु भैंस, घोड़ा, बकरी, हाथी दिया है, वैसे नहीं दिया। बल्कि एक उपहार के रूप में दिया है जिसको देकर ईश्वर ने मनुष्य जाति पर बड़ा उपकार किया है। कारण गाय मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा साथी या सहयोगी है जिससे मनुष्य अपने जीवन को उन्नत व समृद्धिशाली बनाता है, जिसके कारण वह अपने मन, बुद्धि व आत्मा को बलिष्ठ तथा पवित्र बनाता है। गाय से उत्पन्न सभी पदार्थ ही नहीं बल्कि गाय का रोम–रोम मनुष्य के लिए लाभकारी है। गाय एक चलती–फिरती फैक्ट्री है जिसका उत्पादन सस्ता व सुलभ है। कम परिश्रम में अधिक लाभ, गाय मनुष्य को देती है। गाय से अनेक लाभ हैं। जिनमें कुछ लाभ यहां लिखते हैं।

गाय के दूध, दही, मक्खन व पनीर से अनेकों किस्म की मिठाईयां बनती हैं जिनको खाकर मनुष्य स्वयं आनन्दित होता है। तथा अपने अतिथियों व बरातियों को भी आनन्दित करता है। गाय के गोबर व मूत्र से उच्चतम् खाद बनती है, जिससे उत्पन्न हुआ अनाज स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है और जमीन भी उर्बरा होती है। कैमिकल से बनी यूरिया खाद से गाय के गोबर व मूत्र से बनी जैविक खाद कहीं अच्छी होती है। यूरिया खाद से जमीन की उर्बरा शक्ति हर साल कम होती जा रही है जबकि जैबिक खाद से जमीन की उर्बरा शक्ति बढ़ती जाती है। जब से भारत में यूरिया खाद का प्रयोग होने लगा है। तभी से मात्रा में चाहे अनाज अधिक पैदा होने लगा हो परन्तु स्वादिष्ट व गुणचक्र न होने से भारतीयों का स्वास्थ्य कमजोर हुआ है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां की 70 प्रतिशत जनता गांवों में रहकर कृषि करती है। देश में जब से यूरिया खाद का प्रयोग अधिक हुआ है तब से देश को बड़ी हानि उठानी पड़ी है। खुशी की बात है कि अब कुछ वर्षों से सरकार तथा जनता का ध्यान यूरिया खाद का प्रयोग कम करने में और जैविक खाद का प्रयोग बढ़ाने में हुआ है। ईश्वर की कृपा बनी रही तो भविष्य में इस भावना का हल मिलेगा। इसके अलावा गाय के गोबर व मूत्र से कई प्रकार के सामान बनते हैं। जिनमें साबुनें, शैम्पों, अगरबत्ती व फिनाईल आदि मुख्य हैं।

गाय के गोबर व मूत्र से कई किस्म की दवाईयां बनती हैं, यहां तक कि कैन्सर की दवाई भी बनती है, इनसे बनी दवाईयां काफी उपयोगी सिद्ध हुई हैं। गाय का मूत्र नित्य सेवन करने से मनुष्य काफी बिमारियों से बच सकता है। यदि हम गो रक्षा करना चाहते हैं तो हमें गाय द्वारा उत्पादित खाद, सामान तथा दवाईयों का प्रयोग अधिक करना होगा जिससे गाय की उपयोगिता बढ़ेगी। यदि हम एक बूढ़ी गाय या बैल के गोबर और मूत्र का प्रयोग भली भांति करें तो हम बूढ़ी गाय या बैंल से नित्य पचास रूपये कमा सकते हैं और उनके ऊपर नित्य का खर्च अधिक से अधिक तीस रूपये होगा। इस प्रकार एक बूढ़ी गाय या बैल से हम कम से कम बीस रूपये नित्य कमा सकते हैं। यदि ऐसा व्यवसाय सरकार या संस्थाओं द्वारा हो जाये तो कोई भी किसान उनको काटने के लिए कसाईयों को नहीं बेचेगा। तभी गौवंश की रक्षा होनी सम्भव है कारण दूध देने वाली गाय और हल चलाने वाले बैल को तो कोई बेचता हीं नहीं।

एक सबसे बड़ी खूबी गाय में यह है कि गाय की चमड़ी में एक ऐसा आकर्षण है कि वह सूर्य की किरणों से एक प्रकार की ऊर्जा खींचती है और वह ऊर्जा उसके दूध में आने से पीने वालों को बड़ा लाभ होता है। यही कारण है कि गाय के घी में जो एक पीला पन दिखाई देता है वह सूर्य की किरणों का ही अंश है। गाय के दूध में कुछ पीलापन होता है, उसका कारण भी यही है। इस प्रकार गाय अनेक किस्मों से मनुष्य के लिए लाभकारी है, जिसका पूरा विवरण करना असंभव है। ऐसे उपयोगी और लाभकारी पशु को हम काट कर खाते हैं या काटने के लिए बेच देते हैं। यह मानवता के ऊपर एक बड़ा कलंक है। हमें ऐसे कुकृत्यों से सदा बचना चाहिए। तभी हम मानव कहलाने के अधिकारी बनेंगे।

2. गंगा– गंगा नदी सब नदियों में से अधिक पवित्र व श्रेष्ठ है, इसमें कोई सन्देह नहीं। इसके पीछे एक बहुत बड़ा रहस्य है, वह यह है कि इसके पानी में कभी भी कीड़े नहीं पड़ते जबकि अन्य नदियों में पानी में कीड़े बहुत जल्दी ही पड़ जाते हैं। इसके पीछे कारण यह है कि गंगा नदी हिमालय पर्वत के गो–मुख से निकल कर हिमालय के अन्दर ही अन्दर कई किस्म की जड़ी–बूटियों से स्पर्श करती हुई आती है। इसलिए जड़ी–बूटियों के प्रभाव से गंगा का पानी इतना पवित्र व रोग विनाशक हो जाता है, जिसमें कीड़ा नहीं पड़ता, पर गंगा में नहाने से सब पाप धुल जाते हैं, यह एक अन्धविश्वास है। गंगा में नहाने से शरीर शुद्ध होता है पर आत्मा नहीं। आत्मा की शुद्धि तो शुभ कर्म करने, आचरण पवित्र रखने तथा ईश्वर की उपासना करने से ही होगी। इसलिये हमें गंगा नदी के प्रति किसी प्रकार का कोई अन्धविश्वास नहीं पालना चाहिए। कई अन्ध भक्त गंगा के पास खड़े होकर हाथ जोड़ते हैं, पैसे फैंकते हैं, यह सब निरर्थक है, केवल सब अन्धविश्वास है और कुछ नहीं।

3. गायत्री– वैसे तो वेदों के सभी मंत्र सार्थक एवं उपयोगी हैं परन्तु गायत्री मन्त्र अन्य मंत्रों से अधिक लाभदायक है। इसलिए इसको गुरू मंत्र व महामंत्र भी कहा गया है। अन्य मन्त्रों में तो किसी में धन–वैभव के स्वामी होने की याचना की है, किसी में अपने दुखों, दुर्गुणों, दुर्व्यसनों को दूर करके अच्छे गुण, कर्म, स्वभाव की प्राप्ति के लिए याचना की है, किसी में परिवार को सुख बनाने की याचना की है, परन्तु गायत्री मंत्र में सुबुद्धि प्राप्ति की याचना की है जो सर्वोत्तम याचना है। सुबुद्धि आ जाने से बाकी सभी चीजें स्वयं ही आ जाती हैं। इसलिये गायत्री मंत्र का अन्य मंत्रों से अपना अलग ही महत्व है। इसलिए गायत्री मंत्र को वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में अपना एक अलग ही स्थान प्राप्त है।

द्वारा–गोबिन्द राम आर्य
एण्ड सन्स, 180 महात्मा,
गांधी रोड (दो तल्ला)
कोलकत्ता–700007
मो0नं0–9830135794

अतीत के झरोखे से

आर्यों का तीर्थस्थल टंकारा दिग्दर्शन

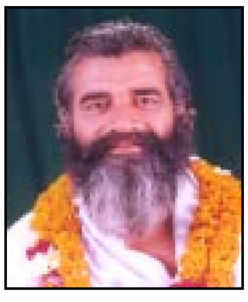

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

शिवरात्रि के पावन पर्व पर प्रति वर्ष महर्षि बोधोत्सव के रूप में टंकारा की पवित्र भूमि पर ऋषि मेला आयोजित किया जाता है। अजमेर में दीपावली के पावन पर्व पर निर्वाण उत्सव के उपलक्ष्य में एवं बोधोत्सव पर इसी प्रकार टंकारा में भी प्रति वर्ष ऋषि मेले के रूप में आयोजन होता है। इसकी तैयारियां लगभग अगस्त से ही प्रारंभ हो जाती हैं।

विगत वर्षों से मेरी प्रबल इच्छा थी कि मैं एक बार महर्षि जन्म भूमि के दर्शन कर अपने जीवन को सौभाग्यशाली बनाऊँ इससे पूर्व भी मैंने एक बार सहगल जी से प्रार्थना की थी कि मैं टंकारा में सेवा के माध्यम से ऋषि ऋण को उतारना चाहता हूं लेकिन माननीय सहगल जी एवं उनके साथियों ने मुझे यही परामर्श दिया कि यहां का कार्य जो आप कर रहे हैं वह अधिक महत्वपूर्ण है और टंकारा की यात्रा आपको शीघ्र करा देंगे। वह सौभाग्यशाली दिवस इस वर्ष हमें प्राप्त हो ही गया।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, आचार्य, गुरूकुल गौतम नगर, नई दिल्ली से दूरभाष पर फोन आया कि 13 फरवरी 2007 को मध्यान्ह टंकारा चलना है, आपका आरक्षण हो चुका है टिकट मेरे पास है। मैंने स्वीकृति प्रदान कर दी। महर्षि की जन्म भूमि देखने का अवसर प्राप्त हो रहा है, इससे अभूतपूर्व उत्साह था। उस स्थान को भी देखना है, पुस्तकों में जो पढ़ा है, चित्रों में जो देखा है, विद्वानों से जो सुना है उसी का साक्षात्कार कर देखना है कि कितना सच है और कितना झूठ है।

विज्ञापन में मेरे नाम को देखकर इधर लोगों का भी उत्साह बढ़ा और अमरोहा– हसनपुर–जे0पी0नगर पिलखुवा– स्याना–मु0नगर–सहारनपुर से काफी संख्या में आर्यों का समूह टंकारा की पुण्य भूमि को चल पड़ा। दिल्ली एवं चण्डीगढ़ की संख्या का तो अनुमान रेलवे स्टेशनों पर ही लगाया जा सकता है कि जैसे कोई बड़े सम्मेलनों के लिए किसी आन्दोलन के लिए विदाई देने आते हैं। परिवारीय सदस्य उत्साह और प्रसन्नता से विदाई देने आये हुये थे।

गुड़गांव–अलवर–ब्यावर–अजमेर आदि स्टेशनों पर भी लोग आर्यों का स्वागत करने एवं कुशलता पूछने कोई फल अथवा नाश्ता तथा भोजन के माध्यम से मिलने आया तो यात्रा में सरलता और सहजता हो गई उत्साह बढ़ता जा रहा था। यात्रा क्या थी बस एक अपूर्व उत्साह का भण्डार था– रास्ते में गाड़ी में चलते हुए मातायें और भाई सभी गुनगुनाते–भजन गाते और संध्या करते, नारे लगाते– यज्ञ करते हुए ऐसा लग रहा था कि गाड़ी नहीं कोई आश्रम है एक दीवानगी देखकर ऋषिवर के प्रति श्रद्धा और बढ़ती ही जा रही थी जिनकी जन्मभूमि को देखने इतनी भारी संख्या में लोग जा रहे हैं, वह कितना महान होगा– रास्ते में तरह–तरह की बदलती भौगोलिक परिस्थितियां, कौतुहल का कारण बन रही थीं, कहीं पहाड़ी कहीं टीले तो कहीं रेत और कहीं सुन्दर शस्य श्यामला लहलहाती कृषि के विभिन्न रूप– गेहूं–चरी तो कहीं सरसों, सूरजमुखी और कहीं एरण्ड की खेती देखकर प्रभु की सृष्टि और प्रभु की कारीगरी पर आश्चर्य हो रहा था, उधर कब राजकोट आवे और हम अति शीघ्र टंकारा पहुंचे।

प्रतीक्षा की घड़ियां यथार्थ में परिवर्तित हो गई और राजकोट स्टेशन पर हम सब आ पहुंचे। अभी उतरकर चले ही थे कि आउम् ध्वज लिए कई ब्रह्मचारी स्वागत के लिए वहां उपस्थित थे हमारा एवं अन्य सभी यात्रियों का स्वागत किया तथा टंकारा तक सुविधापूर्वक पहुंचाया। यह देखकर कार्यकर्ताओं की निष्ठा एवं अधिकारियों की दूरदर्शिता सदाशयता का परिचय मिला टंकारा पहुंचते ही सीधे सामान रखकर हम जन्म स्थान देखने पहुंचे। जन्मस्थली के दर्शन से माथा श्रद्धा से झुक गया।

–गुरुकुल पूठ,
गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़
मोबा0 : 9837402192

लाला दीवान चन्द ट्रस्ट द्वारा आयोजित साहित्यकार सम्मान समारोह में डॉ० भवानी लाल भारतीय का भाषण

सम्माननीय अध्यक्ष जी, देवियों तथा सज्जनों!

सर्वप्रथम तो मैं इस बात के लिए क्षमा याचना करता हूं कि इस सम्मान समारोह में सशरीर उपस्थित नहीं हूं, तथापि विगत कई दशकों में व्याप्त अपने लेखन कर्म की आपको जानकारी दे दूँ। बचपन में बाल पत्रिकाओं ने मुझे लेखन की प्रेरणा दी। इण्डियन प्रेस प्रयाग की बालसखा, लहेरिया सराय बिहार से निकलने वाले बालक तथा अन्य बालोपयोगी पत्रों में छपने वाले लेखों, यात्रा विवरणों तथा चुटकुलों ने मुझे भी लेखन की प्रेरणा दी। बालसखा ने मेरे द्वारा संकलित पहेलियों को जब प्रकाशित किया तो अपने नाम को छपा हुआ देखकर मुझे वर्णनातीत आनन्द हुआ था।

हाई स्कूल तक आते–आते तो सामयिक समस्याओं पर लिखने लगा। उन दिनों राजस्थान में राजस्थानी को लेकर आन्दोलन चल रहा था। स्व० जय नारायण व्यास, सुमनेश जोशी आदि जोर शोर से राजस्थानी को प्रान्त में राजभाषा का दर्जा दिलाने के लिये कटिबद्ध खेमे के उग्र व्यवहार से यह प्रतीत हो रहा था कि इसमें कहीं न कहीं राष्ट्रभाषा हिन्दी के विरोध का श्वर भी सुनाई देता था।

मैनें इस आन्दोलन पर अपने विचार वीर अर्जुन साप्ताहिक में जब लेखबद्ध किये तब मैं 10वीं कक्षा का छात्र था। 1945 में उदयपुर में जब हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन सम्पन्न हुआ तो मुझे इसके अध्यक्ष स्व० कन्हैया लाल माणेकलाल मुन्शी के विचार सुनने के लिए मिले। इस समय में गांधी जी ने हिन्दुस्तानी का समर्थन करते हुए सम्मेलन से इस्तीफा दे दिया था। वे एक मिली–जुली भाषा हिन्दुस्तानी का समर्थन कर रहे थे। किन्तु टण्डन जी तथा मुन्शी जी का मत था कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है।

इस अवसर पर मुझे हिन्दी के अनेक मान्य लेखकों तथा कवियों को देखने का लाभ मिला। डॉ० राम कुमार वर्मा, दिनकर, जगदम्बा प्रसाद हितैषी, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, लखनऊ के हिन्दी प्रकाशक देव पुरूस्कार विजेता दुलारे लाल भार्गव की लेखिका पत्नी श्रीमती सावित्री दुलारे लाल के अतिरिक्त हिन्दी प्रचार में लगे बौद्ध भिक्षु भदन्त आनन्द कौसल्यायन को देखना किसी सौभाग्य से कम नहीं था।

सम्मेलन के इस अधिवेशन पर मैनें अपने संस्मरण लिखे जो वीर अर्जुन में छपे। स्मर्तव्य है कि इन दिनों हिन्दी साप्ताहिकों में वीर अर्जुन का नाम था। पं० राम गोपाल विद्यालंकार तथा कृष्णचंद विद्यालंकार जो गुरूकुल कांगड़ी के यशस्वी सम्पादक थे। धीरे–धीरे में अन्य विषयों पर भी वीरअर्जुन में लिखने लगा। कन्हैया लाल माणिक लाल मुन्शी के उपन्यासों पर मेरे धारावाहिक लेख इसमें प्रकाशित हुए। जब भारतीय संस्कृति के प्रतिष्ठाता शीर्षक मेरा एक लेख इस पत्र में छपा तो पारिश्रमिक रूप में आठ रूपये का मनीआर्डर मुझे मिला। मेरा चकित होना स्वाभाविक ही था। क्या मेरे लेख पारिश्रमिक योग्य हैं परन्तु शीघ्र ही मेरे लेखन की दिशा बदल गई। इस समय मैंने कन्हैया लाल मुन्शी और शरत चन्द चटर्जी के उपन्यास रूचि पूर्वक पढ़े थे और मेरा विचार इन कथा मूर्धन्यों पर दो ग्रन्थ लिखने का था। इधर में आर्य समाज की विचारधारा से बचपन से ही जुड़ा था इसलिए मुझे आवश्यकता महसूस हुई कि ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के विषय में मुझे लिखना चाहिए। फिर तो मेरे लेखन की दिशा ही बदल गई।

मैं इन पत्रों में नियमित लिखने लगा। मेरे एक मित्र विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ने तो यहां तक कहा कि आप इन छुटभैये पत्रों में लिखकर अपनी उर्जा क्यों नष्ट करते हैं। इसके बजाय कोई टैक्सट बुक लिखिये जिसे कुछ अर्थ प्राप्ति हो। मैंने उन्हें विनम्रता पूर्वक उत्तर दिया कि मैं सरकारी नौकरी (राजकीय महाविद्यालय अजमेर में प्राध्यापक) में हूं और मुझे परिवार पालन योग्य वेतन मिलता है परन्तु मैं अपनी लेखनीय उर्जा इस संस्था के प्रति समर्पित करता हूं जिससे मेरा सम्बन्ध है।

फलतः अवशिष्ट जीवन में मैनें भारतीय नवजागरण में ऋषि दयानन्द व आर्य समाज के योगदान का ही विशद विवेचन किया है। अब तक ऋषि के जीवन तथा कार्य पर मेरे लगभग 70 ग्रन्थ छप चुके हैं तथा ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज, थियोसोफिकल सोसाइटी एवं रामकृष्ण मिशन पर मैंने पर्याप्त अध्ययन किया है व लिखा भी है। दशकों तक दयानन्द के जीवन दर्शन और विचारों का अध्ययन करने और एतद् विषयक पत्राचारों व ग्रन्थों को पढ़ने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि इस महापुरूष के दर्शन और चिन्तन को समझने में बड़े–बड़े लेखकों ने भी केवल ऊपरी–ऊपरी बातों का ध्यान ही रखा है, उदाहरणार्थ उनके धर्म एवं समाज सुधार, राष्ट्र भाषा प्रचार तथा राष्ट्रीय भावों को विवेचित करने तक ही वे अपने को सीमित रखे हुये हैं। उनकी तुलना में अन्य देशों के कतिपय विद्वानों ने तथा भारत के ही आर्य समाज से प्रत्यक्ष सम्बन्ध न रखने वाले चिन्तकों ने उनके विचारों को सही रूप से समझा है। उदाहरण के लिये अमेरिका के चिन्तक जे.डेविस, आस्ट्रेलिया की नेशनल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर जे.डब्लू. जार्डन्स अमेरिका के प्रो.केनेथ जोन्स आदि ने उनके चिन्तन और कार्य का समुचित मूल्यांकन किया है।

इसी प्रकार बंगला लेखक तथा दयानन्द के जीवन विषयक खोज और अनुसंधान करने वाले देवेन्द्रनाथ मुखर्जी, पादरी बनकर आये दीनबन्धु सी.के. एन्डूज तथा योगी अरविन्द ने अत्यन्त सूक्ष्मता से स्वामी दयानन्द के विचारों की यथार्थ परख एवं मूल्यांकन किया है। इसी प्रकार योगी अरविन्द तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हाल में दिवंगत प्रो. रघुवंश ने दयानन्द के जीवन मूल्यों को सूक्ष्मता से परखा है। मैंने भी अपने ग्रन्थों में दयानन्द के जीवन और चिन्तन के इन्हीं पहलुओं को उभारा है। इस विषय पर मेरा ग्रन्थ स्वामी दयानन्द सिद्धान्त और जीवन दर्शन में दयानन्द के जीवन तथा कार्यों की ऐसी ही सूक्ष्म विवेचना की है।

इसके अतिरिक्त वेदों, उपनिषदों दर्शन पर मेरे लगभग दो दर्जन ग्रन्थ छपे हैं। मेरे जीवन का एक अन्य आयाम महापुरूषों के जीवन चरित्र लेखन भी है। इनमें दयानन्द के बृहद् जीवन चरित्र ''नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती'' के अतिरिक्त स्वामी श्रद्धानन्द तथा क्रान्ति चेष्ठा के आदि गुरू पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा के जीवन चरित्रों का उल्लेख किया जा सकता है।

सम्पादन, अनुवाद आदि के अनेक मैंने प्रोजेक्ट भी हाथ में लिये और उन्हें पूरा किया। इनमें स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली का सात खण्डों में सम्पादन तथा लाला लाजपतराय ग्रन्थावली का 12 खण्डों में सम्पादन का विशेष उल्लेख किया जा सकता है। गुजराती से अनभिज्ञ होने के कारण मैंने अनेक गुजराती ग्रन्थों का अनुवाद किया है– यथा मीमांसा दर्शन, भाष्य, भागवत सार, केशुभाई देसाई के उपन्यास सूरज बुझाने का पाप आदि। इन सुदीर्घ कालीन लेखन में उन हजारों स्फुट लेखों की चर्चा करना भी अनपर्युक्त नहीं होगा। इस आत्म निवेदन में श्लाघा का भाव नहीं है। मैं अपने प्रेरक महानुभावों तथा पाठकों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता एवं उनकी गुणग्राहकता के प्रति श्लाघा व्यक्त करते हुए इस आत्म कथन को विराम देता हूँ।

स्थायी पता–
डॉ० भवानी लाल भारतीय
8/423 नन्दवन, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर–राजस्थान 334208
फोन न0 0291–2755883

मन की बात

महाशय धर्मपाल

आदमी पैसा क्यों कमाता है?

1– अपने बच्चों के लिए, 2– ऐश के लिए, 3– नाम के लिए, 4– सेवा के लिए।

संत महात्मा और बुजुर्ग कहते आये हैं– जो मुकद्दर में लिखा है, वह जरूर मिलेगा।

कहते हैं कि जो बीजेंगे, सो काटेंगे, जो काटेंगे सा खाएंगे, जो खाएंगे सो बन जाएंगे।

''बोए पेड़ बबूल का, आम कहां से खाएं।''

आदमी बेईमानी, धोखा व दूसरे को बेवकूफ बनाके पैसा कमा लेता है, जबकि उसके मुकद्दर में 100/– रुपया लिखा हुआ था, बेईमानी करके 150/– रुपये कमा लिये। वह कहता है कि मैंने बड़ी चतुराई से 50/– रुपये ज्यादा कमा लिये। वही 50 रुपये घर में बीमारी और कई परेशानियों में लग ही जाते हैं। फिर आदमी कहता है कि मैंने कुछ किया ही नहीं। कहते हैं कि बिना जुर्म के सजा नहीं मिलती, पाप से कमाई तो कर ली। पंजाबी में कहते हैं– पाप्पा बांझ न होवे कट्ठी, ते माया संग न जावे।'

पाप के बिना तो फालतू पैसा आएगा ही नहीं। जब आदमी मरेगा, तो साथ कुछ भी नहीं जाएगा। पाप की कमाई से घर का सब सामान अपने आप को खुश करने के लिए लेकरके आया था, जब आदमी मरता है, तो वही चीजें उसको देखकर हंसती हैं। मरते समय आदमी माथे पर हाथ मार–मार कर रोता है कि मैंने क्यों पाप किये। किंतु ''अब पछिताए होत क्या, जब चिड़ियां चुग गयीं खेत।''

मुझे बहुत पुरानी बात याद है– सरदार दर्शन सिंह हमारे मित्र थे। एक दिन बातों–बातों में कहने लगे–

पैसे में सुख दो घड़ी का,
सेवा में शान्ति जिन्दगी भर की।
जिन्ना लाई तु पाप कमाना,
कित्थे गये तरे घर दे,
टंगा पसार पया विच वेडे
ते चलो–चलों पे कर दें।

पैसा मैं अपने लिए नहीं कमाता, आप सबके लिए कर रहा हूं। मैं तो सिर्फ दो रोटी का हकदार हूं, वो भी आपकी कमाई से। यदि आप भी मेरे जैसा बनना चाहते हो, तो मेरी निम्न छः बातों पर अमल करो–

1– ईमानदार बनना, 2– मेहनत करना, 3– मीठा बोलना, 4– कृपा परमपिता परमात्मा की, 5– आशीर्वाद माता-पिता का, 6– प्यार संसार का।

शरीर, वाणी और मन के दोषों का त्याग करो

1– (1) किसी को पीड़ा पहुंचाना–मारपीट करना, (2) व्यभिचार करना, (3) किसी की चीज को चुराना, (4) अकड़कर चलना और अपवित्र रहना, और (5) व्यर्थ चेष्टा करना आदि शरीर के दोष हैं।

2– (1) असत्य बोलना, (2) किसी की निन्दा या चुगली करना, (3) कड़वा बोलना, गाली देना, शाप देना, (4) अपनी बड़ाई करना, और (5) व्यर्थ बातें, परचर्चा आदि करना– वाणी के दोष हैं।

3– (1) विषाद करना, (2) निर्दय विचार करना, (3) व्यर्थ चिन्तन करना, (4) मन को वश में न कर, भटकने देना, (5) दूषित और अपवित्र विचारों को रखना– ये मन के दोष हैं।

धर्मान्तरण अर्थात् धर्मपरिवर्तन

वेदप्रकाश शास्त्री

'धर्म' एक छोटा-सा शब्द है, किंतु इसकी परिधि अत्यंत व्यापक है। इसी के आधार पर यह विशाल सृष्टि समयानुसार चल रही है। मत, पंथ, सम्प्रदाय, मजहब, इनमें से कोई भी धर्म का पर्यायवाची नहीं है। क्योंकि ये सभी मनुष्यों के द्वारा अपने-अपने विचारों के आधार पर प्रचारित किये गये हैं। सर्वप्रथम यहां वाममार्ग का प्रचार किया गया। धर्म का आधार दक्षिण मार्ग है, और वाममार्ग उसका एकदम विलोम है। वाममार्ग का प्रारम्भकर्ता रावण था, जिसका प्रण था कि मैं धर्म-संस्कृति को नष्ट करके वाममार्गी संस्कृति का सर्वत्र प्रचार करूंगा। उसने ही परमेश्वर की पूजा के विरुद्ध लिंगपूजा प्रारम्भ की। रामायण में श्लोक है-

''यत्र-यत्र प्रयातिस्म रावणो राक्षसेश्वरः। जाम्बूनद मयं लिंगं तत्र तत्र स्म नीयते।।''

अर्थात् राक्षसों का राजा रावण रक्ष संस्कृति का प्रचारक जहां कहीं जाता था, वहां स्वर्ण का बना हुआ लिंग का आकार पृथ्वी में गाड़कर पूजा करता था, और पुजवाता था। महाभारत के युद्ध के पश्चात् यही वाममार्ग भारत में भी सर्वत्र फैल गया। वाममार्ग से मुक्ति का मार्ग पंच मकार पर आधारित है। अर्थात् पांच पदार्थ, जो 'म' अक्षर से प्रारम्भ होते हैं। यही मुक्ति का मार्ग बताया गया है-

मद्यं मासं च मीनं च मुद्रा मैथुनमेव च। एते पंच मकाराः स्युः मोक्षदा हि युगे युगे।।

अर्थात् मद्य (शराब), मांस, मछली, अनेक प्रकार की मुद्रा अर्थात् ठगविद्या, तथा मैथुन- यही मुक्ति का मार्ग वाममार्ग है। इस संप्रदाय के व्यापक होने पर देवी-देवताओं के प्रसाद के रूप में पशु-पक्षियों की हत्या करके उनके मांस का भक्षण पापरहित बताया गया है। वही दुष्कर्म अब भी निरंतर चल रहा है। ईश्वर के नाम पर निर्दयता पूर्वक गाय, बकरी आदि पशुओं को तथा मुर्गा, तीतर आदि पक्षियों को ये रक्ष-संस्कृति के अनुयायी इनका भक्षण कर रहे हैं। यदि इनसे पूछा जाए कि जिस परमपिता परमात्मा ने तुम्हारा शरीर बनाया है, क्या उसने ही इन पशु-पक्षियों का भी शरीर नहीं बनाया है? उनके पास इसका क्या उत्तर होगा।

ये पशु-पक्षी बेजुबान तो हैं, किंतु बेजान नहीं हैं। इनमें भी जान है। इसीलिए इन्हें जानवर कहते हैं। इसी संप्रदाय तथा मजहब के नाम पर असंख्य स्त्री, पुरुष तथा बच्चों की निर्मम हत्या की जाती रही है, और की जा रही है।

इस राक्षसों की संस्कृति से अत्यंत दुखित होकर बौद्ध तथा जैन मत का प्रारम्भ हुआ। उन्होंने पूछा कि यह जीवहत्या का विधान कहां है? वाममार्गियों ने बताया कि यह सब 'वेद' में है और वेद परमेश्वर के दिये हुए हैं। इसी कारण अन्य मतों का प्रादुर्भाव हुआ। अपने-अपने सम्प्रदाय अर्थात् मजहब के प्रचार-प्रसार के लिए सभी निरंतर यत्नशील हैं। यही कारण है कि सारे विश्व में सुख और शान्ति की अपेक्षा दुख और अशान्ति व्याप्त है।

गम्भीरतापूर्वक हम सब विचार करें, तो विदित होता है कि धर्मान्तरण अर्थात् धर्मपरिवर्तन न कभी हुआ, और न कभी होगा। अपने-अपने विचारों के अनुसार जो मत, पंथ, संप्रदाय तथा मजहब बनाये गये हैं, उनमें परिवर्तन होता ही रहता है।

एक व्यक्ति किसी विद्वान के समझाने पर मूर्तिपूजा को निरर्थक मानकर छोड़ देता है। कोई जैन और कोई बौद्ध परमेश्वर की उपासन प्रारम्भ कर देते हैं। हिन्दू, ईसाई, मुसलमान आदि भी अपने विचारों का परिवर्तन होने पर अपने मत को छोड़कर दूसरे मत को अपना लेता है, अथवा परमेश्वर की उपासना प्रारम्भ कर देता है। यह विचारों का परिवर्तन होता है, न कि धर्म का।

इसी धर्मान्तरण के आधार पर भारत की सर्वोच्च सभा राज्यसभा तथा लोकसभा का कार्य बाधित हुआ, जिसके एक दिन के कार्यक्रम में जनता का करोड़ों रुपया खर्च होता है। इस पर देश की जनता को, और देश के नेताओं को विचार करना चाहिए। आइए हम सब 'धर्म' शब्द पर गम्भीरतापूर्वक विचार करें।

धर्म शब्द की दो परिभाषाएं हैं-

1- धार्यते असौ धर्मः।

2- धारणाद् धर्मः।

अर्थात् सृष्टि के सारे पदार्थ तथा इसकी समस्त गतिविधियां धर्म पर ही आधारित हैं। जैसे पंच महाभूत- आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी अपने-अपने धर्म के आधार पर जो परमेश्वर ने इनको धारण किया है, आदि सृष्टि से लेकर प्रलय पर्यन्त यथावत कर्म चलता रहेगा। यही कारण है कि पृथ्वी अपने धर्म को छोड़कर जल का, जल अग्नि का, अग्नि वायु का, वायु आकाश का धर्म धारण नहीं कर सकते। क्योंकि धर्म का परिवर्तन कभी नहीं हो सकता। दूसरी परिभाषा के आधार पर प्रत्येक मनुष्य को परमेश्वर ने वेद के द्वारा जो धर्म बताया है, उसको धारण करना चाहिए। उसको धारण न करने के कारण ही शास्त्र ने कहा है कि-

''धर्मेण हीनः पशुभिः समानः''''

परमेश्वर सबका पिता है और सभी मनुष्य उसकी सन्तान हैं। उन सबके लिए उसका दिया गया धर्म एक ही है। जैसे उसका दिया गया आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी आदि सबके लिए एक ही है। वह वैदिक धर्म ही है, जिसमें न कभी परिवर्तन हुआ है, न कभी होगा।

आर्यावर्त राष्ट्र के प्रथम राष्ट्रपति महर्षि मनु से आर्य जनता ने जानना चाहा कि हमें आर्य धर्म की परिभाषा बताने की कृपा करें। उन्होंने बताया-

''धृति क्षमा दमोस्तेयं शौचं इन्द्रिय निग्रहः। धीर्विद्या सत्यं अक्रोधो दशकं धर्म लक्षमणम्।।''

धृति अर्थात् सुख तथा दुख में धैर्य रखना, क्षमा- अपने से निर्बल के अपराध को क्षमा कर देना, दमः- काम, क्रोध आदि मन के दुर्गुणों का दमन करना, अस्तेयं- बिना आज्ञा के किसी की भी वस्तु का प्रयोग न करना। शौचं- शरीर, मन, बुद्धि तथा आत्मा की पवित्रता। इन्द्रिय निग्रहः - आंख, कान आदि को नियंत्रण में रखना। धीः- स्वाध्याय के द्वारा बुद्धि का विस्तार। विद्या- ईश्वर से लेकर प्रकृति तक सब पदार्थों को जानना। सत्यं- मन, वचन, कर्म से सत्य को ग्रहण करना। अक्रोध- क्रोध न करना अर्थात् दूसरों को हानि पहुंचाने के लिए क्रोध दुर्गुण से बचना।

जनता ने उनसे कहा कि धर्म की और छोटी परिभाषा बता दीजिए। तब महर्षि मनु ने बताया-

''वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षात् धर्म लक्षणम्।।''

अर्थात् वेद में कहा हुआ, वेद के अनुकूल स्मृति में कहा हुआ, सज्जनों का व्यवहार, तथा जो आत्मा को प्रिय हो, वह धर्म है। इसमें प्रश्न उठता है कि चोरी करना चोर की आत्मा को प्रिय है, क्या वह भी धर्म है? इसका उत्तर यह है कि चोरी करना चोर की आत्मा को प्रिय नहीं है, क्योंकि जिस कार्य में लज्जा, शंका, तथा भय हो, वह अधर्म है, और चोरी करने में ये तीनों बातें होती हैं।

धर्म की सबसे सरल परिभाषा महर्षि दयानन्द ने दी है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। इस परिभाषा में 'अहिंसा परमोधर्मः' इत्यादि सब परिभाषा आ जाती हैं। धर्म की ये सब परिभाषाएं ही सनातन हैं। अर्थात् इनमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन संभव नहीं है। इसलिए धर्मान्तरण अथवा धर्म परिवर्तन न कभी हुआ है और न कभी होगा।

-नांगल सोती,
जिला- बिजनौर (उ0प्र0)

सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर बदले न जाने कितने जीवन

सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर न जाने कितने महानुभावों के जीवन बदले। किसी को सत्यार्थ प्रकाश किसी मित्र ने दी, किसी को रद्दी में मिली, किसी ने बस अड्डे के स्टाल से खरीदी। लेकिन किसी भी तरह से जिसको भी सत्यार्थ प्रकाश मिली, उसे पढ़ने के पश्चात् उसके जीवन में अद्भुत परिवर्तन हुए। प्रस्तुत घटना भी ऐसा ही एक ऐतिहासिक प्रकरण है, जिसमें एक पौराणिक संन्यासी सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर आर्य संन्यासी बन गये-

एक समय की बात है। पंजाब में एक पौराणिक साधु स्वामी सर्वदानन्द जी हुआ करते थे। वे स्थान-स्थान पर घूमते हुए धर्मप्रचार का कार्य करते थे। एक बार घूमते हुए एक गांव में पहुंचे, तो वहां पर जाकर स्वामी जी बीमार पड़ गये। कई दिन हो गये, तो एक दिन सद्गृहस्थ उनके पास आया, तो देखा कि महाराज बड़े रुग्ण हैं। वह अपनी दैनिक क्रियाओं को करने तक में असमर्थ थे, तो वह गृहस्थ स्वामी जी को अपने घर पर ले गये, और वहीं पर उनकी खूब मन लगाकर सेवा की। जब स्वामी जी स्वस्थ हो गये, तो एक दिन जाते समय बोले- बच्चा आपने हमारी बहुत सेवा की है, बताओ तुमको क्या आशीर्वाद दूं?।

गृहस्थ ने हाथ जोड़कर स्वामी जी से प्रार्थना की, और एक पुस्तक (सत्यार्थ प्रकाश) सुन्दर रंगीन वस्त्र में लपेट कर भेंट करते हुए कहा कि स्वामी जी आप इसको एक बार अवश्य पढ़ लेना, बस यही हमारे लिए आपका आशीर्वाद होगा।

वह साधु भेंटस्वरूप प्राप्त ग्रन्थ को लेकर निर्जन मार्ग से होते हुए अपनी यात्रा के लिए चल पड़े। रास्ते में पैदल चलते हुए दोपहर में एक पेड़ के नीचे बैठ गये, और सोचने लगे कि उस महानुभाव ने मेरी बहुत सेवा की है, इसलिए सेवक द्वारा दी गयी पुस्तक को एक बार पढ़कर तो देखूं। और उस

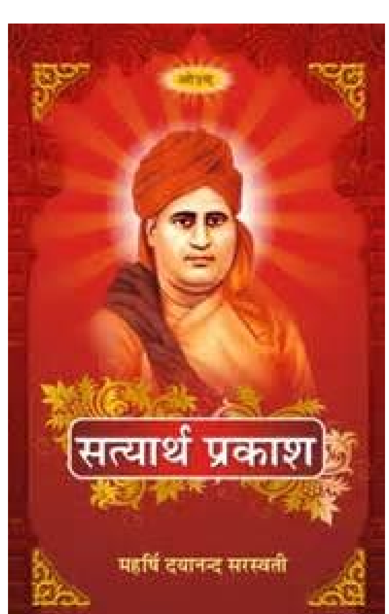

पुस्तक को निकाल कर पढ़ने लगे। प्रथम समुल्लास को पढ़ने लगे, तो मन में ग्लानि हुई कि मैं तो सनातनी (मूर्तिपूजक) साधु हूं और मैं यह क्या पढ़ने लगा। उन्हें क्रोध आया और पुस्तक को दूर फेंक दिया।

थोड़ी देर बाद मन की अद्विग्नता समाप्त हुई और पुनः मन में विचार आया कि जिस व्यक्ति ने मेरी इतनी सेवा की है और बड़े प्रेम से यह भेंट दी, कम से कम एक बार तो अवश्य पढ़ना चाहिए। यह विचारकर पुस्तक को उठाने के लिए चल दिये, और जब पुस्तक उठायी, तो संन्यास प्रकरण के स्थान से (सत्यार्थ प्रकाश का) पृष्ठ खुल जाता है और स्वामी जी पढ़ने में संलग्न होते हैं तो पढ़ते चले जाते हैं। जब इस प्रकरण को पढ़ा तो महद् आश्चर्य से कहने लगे- अरे! हमें तो आज पता चला कि संन्यासी कौन होता है? उसके क्या कर्तव्य हैं? बस समझो कि उनके जीवन में परिवर्तन प्रारम्भ हो गया, और वह महान संन्यासी वेद और ऋषि के सच्चे भक्त बने, और शेष जीवन में आर्य समाज का प्रचार और प्रसार करते रहे, और स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए।

नोट- इसी प्रकार कोटि जनों के जीवन में आमूल परिवर्तन करने वाली यह पुस्तक हर हाथ तक पहुंच सके, हर घर तक पहुंच सके, इसके लिए आवश्यक है कि हम पुस्तक मेलों के अवसर पर न्यून से न्यून मूल्य पर इसे उपलब्ध कराकर इस यज्ञ को सफल बनाएं।

खोटा सिक्का जगत को छल गया

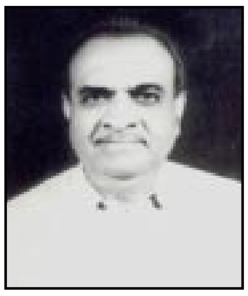

सत्यदेव प्रसाद आर्य मरूत

खोटा यह सिक्का जगत को छल गया।
कभी हुआ अवतार, प्रभु का हमने किया स्वीकार सभी का।
जल–थल और आकाश में चक्का चल गया।।
खोटा सिक्का जगत को छल गया।
शिव, ब्रह्मा, विष्णु, गुरू, गणपति, काली, दुर्गा बन गई पार्वती,
नन्दी–मूषक, गरूड़, ऐरावत नाग–बाघ भी तर गये हद की।
धनुष माण, भाला, कटार, लख, सब अरियों का दल दहल गया।।
मिट्टी पत्थर ले सोना चांदी, हमने सब की मूर्ति बना दी।
लाखों का मंदिर बनवाया, प्राण प्रतिष्ठा की डुगडुगी पिटवा दी।।
मनोकामना पूर्ण होगी, पूजो–पूजो से जगत का दिल दहल गया।
मत्स्यावतार मछली बन आया, कुर्मावतार कछुआ का आया।।
नरसिंह अवतार में भक्त प्रहलाद को प्रभु ने अपना नवरूप दिखाया।
राम–कृष्ण, बुद्धे के अवतार में भगवान मानव रूप में छल गया।।
पंचतत्व आधार सृष्टि को रोचक हुआ साकार दृष्टि का।
हस्त, नेत्र, मुख अधिक लगाकर हमने किया श्रृगार मिट्टी का।।
ऋषियों का देवपूजा, संगतिकरण, दान स्वप्न सहुाना टल गया।
धूप दीप–नैवेद्य चढ़ावा, टीका, भभूत दे बान्धी कलावा।।
स्वार्थ अज्ञान ने दिया बढ़ावा मनोरंजन व्यापार भी हो गया वाह वाह।
दूध, पूत, धन, धान्य देखकर पण्डों का दिल मचला।।
धर्म की हानि ग्लनि चेतावनी साथ–साथ हुई भविष्य वाणी।
गीता गुरूगीता से फैली, मोक्ष, मुस्किल वैतरणी करानी।।
श्रुति स्मृति सब धूमिल हो गई, अमर बेल यह फल गया।
खोटा सिक्का जगत को छल गया।।

नेमदार गंज (नवादा) बिहार

आचार्य उमाकान्त उपाध्याय को श्रद्धांजलि
साथ बिताई रात। हुई न कोई बात।।

देवनारायण भारद्वाज

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय, हरिद्वार का स्थापना शताब्दी समारोह सन् 2002 में आयोजित हुआ था। उसमें भाग लेने के लिए मैं सपिरवार अलीगढ़ से ट्रेन के शयन यान में रात्रि में सवार हुआ। सामने की शायिका पर एक अत्यंत सौम्य शान्त व गम्भीर व्यक्तित्व को शयन स्थिति में पहले से विराजमान देखा। हरिद्वार स्टेशन पहुंचने पर उन्होंने कोच की खूंटी पर टंगी धोती को उतारकर बांध लिया और उतर गये। रात्रि में निद्रा–अनिद्रा की स्थिति में एक–दूसरे को एक झलक भर देखते रहे, किंतु परस्पर कोई परिचय व बात नहीं कर सके। शताब्दी समारोह में मंच से जब उनका परिचय दिया गया, तो पता चला कि आचार्य जी उमाकान्त उपाध्याय जी साथ–साथ यात्रा कर रहे थे। भीड़भाड़ व व्यस्त कार्यक्रम में फिर उनसे सम्पर्क नहीं हो सका। आचार्य जी 'आर्य संसार' मासिक के आदि सम्पादक थे। स्थापना के कुछ ही वर्षो बाद से उन्होंने मेरी रचनाएं प्रकाशित कर, मुझे जो प्रोत्साहन दिया है, वह मेरी सारस्वत साधना की यात्रा में पाथेय रूप में पोषणकारी रहा है। उनके प्रति मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि इन काव्य–पंक्तियों में प्रस्तुत है–

श्री सम्पदा वेद शारदा, इस भूमि भवानी पर आई।
उत्थान मान गुरु ज्ञान दिया, चहुं ओर आपके मुस्काई।।1।।
मार्तण्ड उगा पाखण्ड भगा, आकण्ठ बांध भरपूर मिला।
कान्त शान्त उत्क्रान्त गात का, व्यक्तित्व विभव शिव शूर खिला।।2।।
तरुणाई की अंगड़ाई सा, संयम सौजन्य सजा लाई।
उत्वाह उठा उल्लास बढ़ा, उत्कर्ष हर्ष आभा आई।।3।।
पारंगत पुण्य प्रवीण हुए, महर्षि कृति गिरा अग्रसर की।
ध्यान ध्येय श्रुति गम्य गेय, सम्पादन की कला मुखर की।।4।।
यज्ञ अनल की ज्वालाएं उठ, यश कीर्तिमान लेकर आई।
जीवन में जय जयकार हुआ, जन जन ने श्रद्धांजलि गाई।।5।।

–'वरेण्यं अवन्तिका (प्र0) रामघाट मार्ग, अलीगढ़।

भगवान शब्द में व्याप्त पांच तत्व

शिवअवतार सरस

पांचों तत्व सभी सुखदायी, अगर शुद्ध है पर्यावरण।
सभी तत्व जीवनदायक हैं, जड़-जंगम सबके कारण।।
'भूमि' और 'जल' के मिश्रण से, सभी पिण्ड लेते आकार।
तत्व तीसरा प्राण 'वायु' ही, जीवन को देता आधार।।
'अग्नि' तत्व के कारण हमको सतत ऊर्जा है मिलती।
'गगन' तत्व ही शब्द ब्रह्म है, जिससे यह जिह्वा हिलती।।
सभी तत्व भगवान रूप हैं, 'भ' से 'भू' है 'ग' से 'गगन'।
'व' देता है 'प्राणवायु' तो, 'आ' से मिलती हमें 'अगन'।।
'न' से लेकर 'नीर' तत्व हम, हो जाते भगवान स्वरूप।
पांचों तत्वों के मिश्रण से पा लेते सब अपना रूप।।
भ= भू। ग= गगन। व= वायु। आ= आग। न= नीर।
क्षिति जल पावक गगन समीरा।
पंच तत्व से बना शरीरा।। (तुलसीदास)

–मालतीनगर, मुरादाबाद
मोबा. : 09456032671

मानव तुम कैसे हो?

डॉ0 रीता

मानव तुम कैसे हो?
क्या तुम मां के गर्भ में पले
उस भ्रूण का केवल विकसित रूप हो
जो, ईश्वर प्रदत्त एक निश्चित
आकृति ग्रहण किये है
और विकास के आधार पर,
विभिन्न जीवन पद्धतियां
अपनाता जा रहा है।
नहीं मानव!
तुम्हारी केवल यही परिभाषा
नहीं हो सकती।
तुम तो ईश्वर की वह श्रेष्ठतम कृति हो
जिसे उसने विभिन्न वैचारिक बौद्धिक
और शारीरिक क्षमताओं से
पुरस्कृत किया है।
जिससे तुम उसकी सृष्टि के
रक्षक बन सको।
हे मानव् ! ये तुम पर ही निर्भर है
कि तुम इन क्षमताओं द्वारा
अपनी कर्मस्थली सृष्टि की
कैसे रक्षा करते हो?
ध्यान रखो वह सृष्टिकर्ता तुम्हारा
परीक्षक भी है।
उसकी सृष्टि तुम्हारे हर कर्म पर है,
यदि तुमने अपनी क्षमताओं का दुरूपयोग कर,
सृष्टि के भक्षक का रूप ले लिया,
तो वह तुमसे उनका हनन भी कर सकता है।
अब निर्णय तुम्हारे हाथ में है मानव
कि तुम स्वयं को किस रूप में
परिभाषित करवाना चाहते हो
रक्षक या भक्षक?

एफ–11, फेज–4
आदर्श एनक्लेब, आयानगर दिल्ली
मो0नं0–08860257907

देव दयानन्द जगत हितकारी

डॉ0 स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती

आये–आये दयानन्द
जैसे पुर्निभा के चन्द
देते सबको आनन्द
कैसे मैं बताऊं, दिल खोल के
पाया शिव का सच्चा रूप
दिया वेदों को सरूप
भक्त बन गये कोई भूप
मिट गये कई फन्द्
कैसे मैं बताऊं, दिल खोल के
ऋषि मुनियों का रंग
किया वेदों का सत्संग
फैली धर्मज्ञान की तरंग
दिखी उपनिषदों की मकरन्द
कैसे मैं बताऊं, दिल खोल के
सुन अवलाओं की पुकार
भरी दयानन्द ने हुंकार
भागो पाखण्डी सियार
फैली सत्य की सुगंध।
कैसे मैं बताऊं, दिल खोल के
देव दयानन्द बाल ब्रह्मचारी
जिसने बताई वेदों की बनहारी
सत्यता सत्यार्थ प्रकाश में लाई
देश हित मृत्यु को अपनाई
कर गया सबकी भलाई
नारी की महानता बताई
स्वराज की अलख जगाई
"अर्यिश" धर्म की ज्योत जलाई
कैसे मैं बताऊं, दिल खोल के
ये टंकारे की भूमि
वैदिक विद्वानों ने चूमी
आर्य जनता यहीं झूमी
छाया आनन्द ही आनन्द
हो गये रामनाथ निहाल
अजय भाई कर रहे कमाल
अर्यिश जगत में प्रसन्द
"अर्यिश" कैसे मैं बताऊं, दिल खोल के

–मनन आश्रम,
पिण्डवाडा, सिरोही

नन्हीं परी

ओम प्रकाश अग्रवाल

दुल्हन सी सज जाती है ये नन्हीं परी
हर मन को भाती है ये नन्हीं परी
हमारी संस्कृत से जुड़ती ये नन्हीं परी
बहार ले आती है ये नन्हीं परी
नई शुरूआत कराती ये नन्हीं परी
जीवन में बदलाव लाती ये नन्हीं परी
हमसफर बन जाती है ये नन्हीं परी
भ्रणहत्या ना करो बताती ये नन्हीं परी
मधुर मीठी मुस्कान है ये नन्हीं परी
जीवन चक्र जननी है ये नन्हीं परी

भजन गायक एवं गीतकार
शिवाजी चौक बर्धा (महाराष्ट्र)
मो. : 9421533215

गाय को माता क्यों कहते हैं?

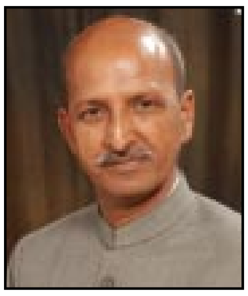

डॉ अ कीर्तिवर्धन

अमेरिका के कृषि विभाग द्वारा एक पुस्तक "Cow is Wonderful Laboratory" अर्थात् गाय एक अद्भुत प्रयोगशाला है, जारी की गयी। इस पुस्तक की चर्चा करने का उद्देश्य उन विद्वान लोगों को आइना दिखाने का प्रयास है जो भारतीय धर्म ग्रंथों, शास्त्रों एवं प्रचलित मान्यताओं का विरोध करते हैं और इतिहास से खिलवाड़ कर अंग्रेजी व मुस्लिम काल में लिखे गए झूठे व बेबुनियाद ग्रंथों को सही मानकर उनका आचरण करते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सभी जीव– जन्तुओं तथा दुग्धधारी पशुओं में केवल गाय ही एक ऐसा पशु है जिसकी 180 फुट लम्बी आँत होती है। जो गाय द्वारा खाए गए भोजन को पचाने में सहायक होता है। गाय की रीढ़ की हड्डी के भीतर सूर्यकेतु नामक नाड़ी होती है जिस पर सूर्य की किरण के स्पर्श से स्वर्ण तत्व का निर्माण होता है गाय के एक क्वंटल (100 किलोग्राम) दूध में एक माशा स्वर्ण पाया जाता है। गाय के दूध व घी का रंग पीला होने का भी यही कारण है। यह पीलापन कैरोटीन तत्व के कारण होता है। कैरोटीन तत्व की शरीर में कमी होने पर ही मुख, फेफड़े तथा मूत्राशय में कैंसर होने के अवसर ज्यादा होते हैं। यह कैरोटीन तत्व गाय के दूध में भैंस के दूध से 10 गुणा ज्यादा होते हैं। एक बात और जो वैज्ञानिकों ने शोध किया कि भैंस के दूध को गर्म करने पर पौष्टिक तत्व खत्म हो जाते हैं जबकि गाय के दूध को गर्म करने पर वह खत्म नहीं होते।

वैज्ञानिकों ने गाय के सींगों का आकार पिरामिड की तरह होने के कारणों पर भी शोध किया और पाया कि गाय के सींग शक्तिशाली एंटीना की तरह काम करते हैं और इनकी मदद से गाय सभी आकाशीय ऊर्जाओं को संचित कर लेती है और वही ऊर्जा हमें गौमूत्र, दूध और गोबर के द्वारा प्राप्त होती है। इतना ही नहीं शोध से यह भी पता चलता है कि गौमूत्र में कारबोलिक एसिड होता है जो कि कीटाणुनाशक होता है तथा शुद्धता एवं स्वच्छता बढ़ाता है। इसके अलावा भी अनेक परीक्षणों से पता चला है कि गौमूत्र में नाइट्रोजन, फास्फेट, यूरिक एसिड, पोटेशियम, सोडियम तथा लैक्टोज आदि तत्व होते हैं जो मनुष्य के शरीर को हृष्ट–पुष्ट बनाते हैं। गाय के गोबर तथा मूत्र को मिलाने से प्रोपलीन ऑक्साइड गैस बनती है जो बरसात लाने में सहायक मानी जाती है और एक दूसरी गैस इथलीन ऑक्साइड भी पैदा होती है जो ऑपरेशन थियेटर में काम आती है।

नेशनल रिसर्च इंस्टिट्यूट, करनाल (हरियाणा) से प्रकाशित एक आलेख में गाय के घी का वैज्ञानिक विश्लेषण बताया गया है जिसके अनुसार इस घी में वैक्सीन एसिड, ब्युटिक एसिड, वीटा कैरोटीन जैसे तत्व पाये जाते हैं जो शरीर में पैदा होने वाले कैंसरीय तत्वों से लड़ने की क्षमता रखते हैं। वैज्ञानिकों द्वारा यह भी माना गया कि गाय के 10 ग्राम घी को दीपक में जलाने, गोबर के जलते उपलों पर डालने अथवा यज्ञ में आहुति डालने से लगभग एक टन प्राण वायु उत्पन्न होती है तथा उससे वायुमंडल में एटोमिक रेडिएशन का प्रभाव काम हो जाता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण भोपाल में 1984 में यूनियन कार्बाइड कारखाने से गैस रिसाव के समय देखने को मिला। जिन घरों में गाय के गोबर, मूत्र, दूध व घी का प्रयोग था वहां गैस का प्रभाव काम पाया गया था।

गाय के दूध का रासायनिक विश्लेषण करने पर उसमे 87.3 :पानी, 4 : प्रोटीन्स, 4 : वसा, 4 :कार्बोहाइड्रेट्स, 0. 7 :मिनरल्स तथा ऊर्जा यानी कैलोरी 65 : पायी जाती है। इसके अलावा भी कैल्शियम, सोडियम, मैग्नीशियम, पोटेशियम, क्लोरीन, लौह तत्व व विटामिन ए, बी, सी, डी भी पाये जाते हैं तथा विटामिन ए की अधिकता होती है जो शरीर को सशक्त बनाने में अधिक सहायक है।

रशियन वैज्ञानिकों द्वारा भी अपने शोध में पाया गया कि गाय के दूध और घी में strontian नामक तत्व है जो अणु विकिरण का प्रतिरोधक है। गाय के दूध में सेरीब्रोसाडस तत्व है जो बुद्धि के विकास में सहायक है। गाय का दूध शीतल होने के कारण पित्त विकार, अल्सर, एसिडिटी तथा दाह रोगों में लाभदायक, सुपाच्य, माताओं, दुर्बल, वृद्ध, बीमार व बच्चों के लिए गुणकारी है। जलोदर नामक बीमारी से ग्रस्त व्यक्ति के लिए पानी पीना सख्त मना होता है मगर वह भी गाय का दूध पीकर स्वस्थ हो सकता है।

अब बात करते हैं भारतीय धर्म ग्रंथों एवं शास्त्रों की जिन्हे सृष्टि का प्राचीनतम व वैज्ञानिक आधार पर प्रतिपादित माना जाता है, तथा जिसके सिद्धांत वर्तमान वैज्ञानिक कसौटी पर भी खरे परखे हैं और जिन्हे हमारे तात्कालीन वैज्ञानिकों–ऋषि–मुनियों ने धर्म से जोड़कर हमारे बीच स्थापित किया और हमारी जीवन शैली का हिस्सा बना दिया।

प्रश्न यह है कि भारत में सनातन धर्म यानी हिन्दुओं के लिए गाय पवित्र व माता क्यों मानी जाती है ? हमारे शास्त्रों में कहा गया है ————————

या लक्ष्मीः सर्वभूतानां सर्वदेवष्ववस्थिता। धेनरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु। नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्रोभ्यो ममो नमः।

अर्थात जो सब प्रकार की भूति, लक्ष्मी है, जो सभी देवताओं में विद्यमान है, वह गौ रूपिणी देवी हमारे पापों को दूर करे। जो सभी प्रकार पवित्र है, उन लक्ष्मी रुपी सुरभि कामधेनु की संतान तथा ब्रह्मपुत्री गौओं को मेरा बार बार नमस्कार। वेदों में पृथ्वी को भी गाय रूपा माना गया है। गौ के श्रृंगों के मध्य में ब्रह्मा, ललाट में भगवान शंकर, दोनों कानो में अश्विनी कुमार, नेत्रों में चन्द्रमा और सूर्य,तथा कक्ष में साध्य देवता, ग्रीवा में पार्वती, पीठ पर नक्षत्र गण, ककुद् में आकाश,गोबर में अष्टैश्वर्य संपन्न तथा स्तनों में जल से परिपूर्ण चारों समुद्र निवास करने की बात कही गयी है। वाल्मीकीय रामायण के अनुसार भी गाय को समृद्धि, धन–धान्य एवं सृष्टाति सृष्ट भोज्य पदार्थों की प्रदाता बताया गया है।

ऋग्वेद 8ध101ध15 में कहा गया है ———

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।

प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागार्दितिम वधिष्ट।

अर्थात ग शत्रुओं को रुलाने वाले वीर मरुतों की माता, वसुओं की कन्या, अदिति की पुत्री और अमृत का तो मानो केंद्र ही है। इसलिए विवेकी मनुष्यों को निरपराध तथा अवध्य गाय का वध नहीं करना चाहिए। गाय धर्म एवं संस्कृति का प्रतीक है। वेदों ने उसे श्रद्धा भाव से नमन किया है–

[illegible] ये ते नमः। (अथर्ववेद 10ध10ध1)

त्याग मूर्ति होने के कारण देवी भागवत में उसे सर्वोत्तम माता कहा गया है ——

नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नमः।

गवां बीजस्वरूपायै नमस्ते जगदम्बिके। (9ध49)

महाभारत के 'अनुशासन पर्व' भीष्म पितामह महाराज युधिष्ठर को गाय महामात्य सुनाते हुए कहते हैं ——

मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः।

वह सभी सुखों वाली है, सभी प्राणियों की माता है।

आदिशंकराचार्य जी ने 'ब्रह्मोपलब्धि' में सर्वोत्तम साधन माना है——

गावः पवित्रं परमं गावो मांगल्यमुत्तमम्।

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः।

महर्षि चवन की गोनिष्ठा का प्रतीक नहुष को दिया गया यह उपदेश ————

गाबोरू लक्ष्म्याः सदामूलं गोषुपाप्मा न विद्यते।

अन्नमेव सदा गावो देवानां परमं हविः।

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गोपि पूजिताः।

गावः कामदुहो देव्यो नान्यात किंचित परं स्मृतम्।

महाकवि कालिदास ने भी यरघुवंशय में कहा है ——

न केवलानाम् पयसा प्रस्तिमवेही मां कामदूधां प्रसन्नाम्। (2ध63)

अन्य मतों में गाय के प्रति धारणा —————

पैगम्बर मोहम्मद साहब ने "नाशियात हादी" ग्रन्थ में कहा है "गाय का दूध और घी तुम्हारी तंदरुस्ती के लिए जरुरी है, किन्तु गाय का गोश्त नुक्सान करने वाला है। "हदीस" में कहा गया है कि गाय के गोस्त से बीमारियां होती हैं तथा गाय का दूध दवाई व घी रसायन है।

मुल्ला मुहम्मद वाकर हुसैनी (महारुल अनवर) का कहना है कि "गायों को मारने वाला, फलदार दरख्त काटने वाला और शराब पीने वाला कभी बख्शा नहीं जाएगा। हजरत आयशा (मुहम्मद साहब की पत्नी) ने कहा कि– "रसूल अल्लाह ने फरमाया है कि गाय का दूध शिघ है और घी दवा व उसका माँस भयंकर मर्ज है। अतः उस पर छुरी नहीं चलायी जानी चाहिए।

पवित्र कुरआन में कहा गया है कि ——

अल्लाह ने आदम को आदेश देते हुए कहा ———तुम और तुम्हारी पत्नी जब स्वर्ग में थे, उस समय हमने तुम्हे फल खाने के लिए दिए। और तुम अब जहाँ भी रहोगे वहां भी तुम्हे फल ही खाने को देंगे। (2 . 35)

तुम्हारे रहने के लिए यह धरती बनाई है और सिर पर आकाश रूपी छत तैयार की है तथा आकाश से पानी बरसाया है इसलिए कि तुम्हारे खाने के लिए फल पैदा हों सकें।"(2ध22)

सभी धर्मों ने गाय के महत्त्व को जाना समझा और अपने अनुयायियों से उसका अनुसरण करने के लिए भी कहा। आज विश्व में अनेक देश हैं जहाँ गाय के काटने पर मृत्यु दंड का भी प्रावधान बताया जाता है।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि गाय को माता कहने का कारण हमारे ऋषि– मुनियों तथा तात्कालिक वैज्ञानिकों की शोध के पश्चात गाय की उपयोगिता ही है। एक और आश्चर्य जनक बात भी बताना उचित होगा जिसके कारण हमारे शास्त्रों में गाय को वैतरणी पार कराने वाली कहा गया है "गाय कभी भी पानी में नहीं बैठती, न ही ठहरती है। इतना ही नहीं गंदे पानी के तालाब की तरफ भी गाय नहीं जाती है। अगर कहीं ज्यादा पानी में गाय फंस जाए तो वह तैरती हुयी सूखे स्थान की तरफ चली जाती है। हमारे शास्त्रों में गाय की पूंछ पकड़कर वैतरणी पार करने की बात भी शायद इसी खोज का परिणाम है।

सन्दर्भ– अध्यात्म अमृत। सत्य चक्र। मानस चन्दन। दैनिक जागरण। राष्ट्रदेव। अग्निगामी। मानस स्तम्भ।कुरुक्षेत्र सन्देश।पुष्प वाटिका। विश्व विधायक।

ऐसे होते हैं आर्य

आर्य विभूति- शिवराम सिंह आर्य

श्री ठाकुर जी महाराज उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिमरिया रायपुर, जनपद- शाहजहांपुर (उ0प्र0) के संस्थापक-प्रबन्धक व पूर्व जिला पंचायत सदस्य, ग्राम प्रधान तथा आर्य समाज तिलहर के सम्मानित सदस्य हैं श्री शिवराम सिंह जी आर्य।

आपने शिक्षण-प्रशिक्षण के बाद पूरी तन्मयता से समाजसेवा, कुरीतियों के निवारण एवं दुर्व्यसनों से बचाव, दलितों, बेसहारा लोगों को तन, मन, धन से सहयोग प्रदान कर, उनके दिलों में ऐसे बसे कि आपको सन् 1989 से 2010 तक ग्राम सभा का प्रधान बनाया गया। सन् 2000 से 2005 में महिला सीट आरक्षित होने पर आपकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला देवी को ग्राम सभा का प्रधान बनाया और स्वयं श्री आर्य जी को जिला पंचायत सदस्य चुना।

आप धर्मनिष्ठ पूर्ण वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत हैं। पूरा परिवार वैदिक आदर्श परिवार के प्रतीक हैं। आपकी सत्यनिष्ठा ने ही समाज के सबसे श्रेष्ठ लोगों में उच्च स्थान व सम्मान प्राप्त किया है। आज भी 59 वर्ष की आयु में अपने विद्यालय में एक घंटा वैदिक साहित्य का अध्यापन कार्य करते हैं। विद्यार्थियों को आर्य समाज से जुड़ने की प्रेरणा भी देते हैं। ईश्वर आपको दीर्घ आयुष्य प्रदान करे।

-डॉ0 रामशरण लाल आर्य
ग्राम- रामनगर,
पो0- मकरन्दपुर
जि0- शाहजहांपुर (उ0प्र0)

स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती

श्री स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती (पूर्व नाम राजपाल आर्य) का जन्म इन्दौर मध्य प्रदेश में हुआ। 13 वर्ष की छोटी अवस्था में ही आप आर्य समाज के सम्पर्क में आ गए थे। आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर में आर्य कुमार महासभा में कार्य किया। आप स्वामी दयानन्द स्मृति स्मारक ट्रस्ट, टंकारा के अखिल भारतीय प्रचारक के रूप में 1964 से 1968 तक रहे। यात्राओं से आपको विशेष लगाव रहा है। विगत पचास वर्षों से निरन्तर भारत, नेपाल की यात्राएं वैदिक धर्म के प्रचारार्थ की हैं तथा यात्रा के अनुभवों को लेकर और आर्य समाज के प्रसिद्ध स्मारकों को लेकर पुस्तक भी प्रणीत की है। आपने ज्यादातर यात्राएँ साईकिल के द्वारा की इसलिए आप भारत साईकिल यात्री के रूप में विख्यात हो गए।

प्रेरक प्रसंग

लंगोटी

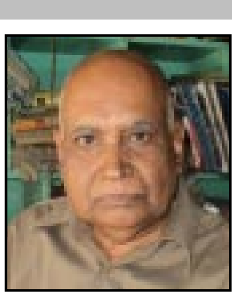

कृष्णमोहन गोयल

चम्पारण में गांधी जी 'बा' के साथ कार्य कर रहे थे। 'बा' ने एक महिला से कहा कि तुम इतने गन्दे कपड़े क्यों पहनती हो? साफ-सुथरा रहना चाहिए। वह महिला 'बा' को अपने साथ अपनी झोपड़ी में ले गयी। झोपड़ी दिखाते हुए बोली कि इस झोपड़ी में देखो क्या रखा है? दो-तीन खाली मिट्टी की हंडियां हैं और एक बिछावन है। मैं अपने पति के साथ मेहनत-मजदूरी कर, जीवन यापन करती हूं। मेरे पास इस धोती के अलावा और कोई वस्त्र नहीं है, जो मैं नहाकर बदल सकूं। आप गांधी जी से एक धोती दिलवा दो।

'बा' ने गांधी जी को जब व्यथा सुनाई, तो उन्होंने तुरन्त एक धोती उस महिला को दी, और प्रण किया कि मैं अब केवल एक लंगोटी ही पहनूंगा।

-113, बाजार कोट, अमरोहा

यह है होलिका दहन का सही अर्थ

श्रद्धानन्द योगाचार्य

अज्ञानवश लोग लकड़ियों का ढेर इकट्ठा करके होलिका दहन करते हैं। जबकि नये अधपके अन्न होलक कहलाते हैं और उसका ऊपरी आवरण होलिका कहलाता है। जब नया अन्न होलक को भूनते हैं, तब ऊपरी आवरण होलिका जलकर राख हो जाता है। भुने हुए अन्न को खाने से वात-पित्त-कफ का शमन होता है। इसी प्रकार नरसिंह अर्थात् जो नरों में सिंह के समान होकर अपनी युवा-शक्ति से पंजीवाद का शोषण समाप्त करके एकरूपता स्थापित करता है, वही हिरण्यकशिपु का वध कहलाता है। क्योंकि हिरण्यकश्यपु का अर्थ होता है, जो समाज में शोषण करके धनोपार्जन करता है, जिससे विषमता बढ़ती है। इसको नरसिंह ने समाप्त कर दिया और एकरूपता स्थापित हुई। तभी लोग गले मिलकर एक-दूसरे के आभारी होते हैं और अज्ञान, अन्याय समाप्त हो जाता है। क्योंकि ज्ञानी से अज्ञान को धनी से निर्धनता को, बल से निर्बलता समाप्त की जावे, तभी एकरूपता स्थापित होती है।

-बजरिया कायमगंज
फर्रुखाबाद

ईश्वर मनुष्य के शरीर में विद्यमान है, परन्तु अज्ञानी मनुष्य इसे बाहर ढूंढते फिरते हैं

अश्विनी कुमार पाठक

भगवद्गीता अध्याय 18, श्लोक- 61 व 62 में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा था-

ईश्वरः सर्वभूतानाम हृद्देशे जुन तिष्ठति भ्राम्यान सर्व भूतानि यन्त्रारूढानि मायया।

अर्थात् हे अर्जुन! परमेश्वर प्राणी मात्र के हृदय में बैठा है। वही देह रूपी यंत्र में आरूढ़ सब जीवों को अपनी मायाशक्ति से घुमा रहा है। (श्लोक-61)

तेमव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत तत प्रसादात परम शतिं स्थानम प्राप्यसि शश्वतम्।

अर्थात् हे अर्जुन! सब प्रकार से उसी की शरण में जा। उसकी कृपा से तू परम शांति और सनातन परमधाम को प्राप्त हो जाएगा। (श्लोक- 62)

भगवद्गीता के किसी भी श्लोक में मूर्तिपूजा करने को नहीं कहा गया। गीता अध्याय-13, श्लोक-13 में ईश्वर को निराकार बतलाया गया है। इसलिए उसकी कोई मूर्ति भी नहीं है। परन्तु लोग स्थान-स्थान पर घूमकर मन्दिरों में पूजा करते फिरते हैं। परन्तु सिवाय दुख उठाने के कुछ नहीं मिलता। अनियंत्रित भीड़ में कई दुर्घटनाएं हो जाती हैं, जिनमें कई लोगों की मृत्यु तक हो जाती है। ईश्वरप्राप्ति का एकमात्र साधन पतंजलि मुनि द्वारा बताया योगध्यान ही है। इससे ही ईश्वर का साक्षात्कार हो सकता है। मूर्तियां किसी की रक्षा नहीं कर सकतीं, और न अपनी ही कर सकती हैं। विदेशी आक्रमणकारियों तथा बादशाहों ने अनेक मन्दिरों तथा मूर्तियों को तोड़ा था। इसलिए जड़ अर्थात् बेजान मूर्तियों की पूजा करने से कोई लाभ नहीं होता। हमें ही अपने मन्दिरों तथा मूर्तियों की रक्षा विधर्मी लोगों से करनी होगी।

देश-विदेश में हजारों मन्दिर बने हुए हैं। मेरा तो यह सुझाव है कि लोग मन्दिरों में केवल मूर्तियों के दर्शनार्थ ही जाएं, तथा उनसे प्रेरणा लेकर स्वयं महान बनें। यही उनकी पूजा है।

सी-33, नानकपुरा, दिल्ली
फोन : 026871636

स्वास्थ्य चर्चा

नशा छोड़ें, घर जोड़ें

नशा एक ऐसी बीमारी है, जो हमें, हमारे समाज को, हमारे देश को तेजी से निगलती जा रही है। आज शहर और गांवों में पढ़ने, खेलने की उम्र में स्कूल और कॉलेज के बच्चे हों, या युवा, मादक पदार्थों के बाहुपाश में जकड़ते जा रहे हैं। इस बुराई के कुछ हद तक जिम्मेदार हम लोग भी हैं। हम अपने कामधन्धों में इतना उलझ गये हैं कि हमें फुरसत ही नहीं है, यह जानने की कि हमारा बच्चा कहां जा रहा है व क्या कर रहा है। कोई परवाह किये बिना बस बच्चों की मांगें पूरी करना ही हम अपनी जिम्मेदारी समझ बैठे हैं।

क्यों करते हैं लोग नशा- कभी शौक के नाम पर तो कभी दोस्ती की आड़ में, कभी दुनिया के दुखों का बहाना करके तो कभी कोई मजबूरी बताकर, कभी टेंशन तो कभी बोरियत दूर करने के लिए लोग शराब, सिगरेट, तम्बाकू, गुटखा, अफीम आदि अनेक प्रकार के मादक पदार्थों का सेवन करते हैं, लेकिन नशा कब उनकी जिन्दगी का हिस्सा बन जाता है, उन्हें पता ही नहीं चलता। जब पता चलता है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

नशे से नुकसान- हिंसा, बलात्कार, चोरी, आत्महत्या, लूट आदि अनेक अपराधों के पीछे नशा एक बहुत बड़ी वजह है। शराब पीकर गाड़ी चलाते हुए दुर्घटना करना एक आम बात हो गयी है। वहीं शादीशुदा व्यक्तियों द्वारा नशे में अपनी पत्नियों के साथ मारपीट करने के अनेकों उदाहरण हैं। मुंह, गले व फेफड़ों का कैंसर, ब्लड प्रेशर, अल्सर, यकृत रोग, अवसाद एवं अन्य अनेक रोगों का मुख्य कारण यह विभिन्न प्रकार का नशा ही है।

उपचार- नशा छोड़ने के लिए निम्न उपाय करें-

डायरी बनाएं- नशा कब और कितनी मात्रा में लेते हैं, लिखें।

विचार करें- आपके लिए आपका परिवार, बच्चे, कैरियर, और स्वास्थ्य कितनी अहमियत रखता है, व आपके नशा करने से इन चीजों पर कितना असर हो रहा है, इसका आकलन करें।

नशा छोड़ने से आपको क्या फायदे और क्या नुकसान होंगे, एवं यदि आप नशा जारी रखते हैं, तो आपके भविष्य पर क्या असर होगा, इस पर गम्भीरता से विचार करें।

पॉजिटिव रहें, अपने आप को खुलकूद, प्रेरक साहित्य पढ़ना, फिल्म देखना एवं संगीत सुनना जैसी गतिविधियों में व्यस्त रखें, अकेले न रहें।

वार्षिकोत्सव 21 से

सूरजपुर (ग्रेटर नोएडा) कर्मवीर आर्य। आर्यसमाज का 53वां वार्षिकोत्सव 21 से 23 मार्च तक धूमधाम से मनाया जायेगा। महेन्द्र कुमार आर्य प्रधान व पं. मूलचंद शर्मा मंत्री द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार इस अवसर पर आचार्य स्वदेश, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी यज्ञमुनि आदि विद्वान पधार रहे हैं।

जिला जेल को भेंट किये बर्तन

कोटा। सैन्ट्रल जेल कोटा में डीसीएम श्रीराम लिमिटेड के अधिकारियों, कर्मचारियों ने भोजन बनाने के बर्तन भेंट किये। डीसीएम के वरिष्ट वाइस प्रेसीडेन्ट वीनू मेहता, संयुक्त उपाध्यक्ष निगम प्रकाश महाप्रबन्धक यूएन शर्मा, श्रमिक संघ के अध्यक्ष आर डी माथुर, आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा व श्रमिक प्रतिनिधि व अधिकारी वर्ग ने एक बड़ा भगोना, स्टील की बाल्टियां, 5 कढछे जेल की भोजनशाला के लिए डीसीएम श्रीराम लिमिटेड की ओर से जेल अधिकारी को दिये।

श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट (पंजी.), टंकारा के यशस्वी मंत्री जन-जन के हृदय सम्राट, सहृदय, कर्मयोगी, परोपकारी व समाजचेता सर्वप्रिय, धर्मनिष्ठ आर्य

रामनाथ सहगल

को उनके ९१वें जन्म दिवस १३ मार्च पर हार्दिक बधाई

टंकारा ट्रस्ट (पंजी.) व आर्यावर्त केसरी परिवार

श्रीराम सेवा ट्रस्ट (पंजी.), श्रीराम विज्ञान संकाय, श्रीराम पब्लिक स्कूल एवं श्रीराम पब्लिक इण्टर कालेज के संस्थापक, आर्य उपप्रतिनिधि सभा व आर्यावर्त केसरी के संरक्षक

श्रीराम जी गुप्ता

को उनके ८३वें जन्म दिवस ०२ मार्च पर हार्दिक बधाई

श्रीराम सेवा ट्रस्ट (पंजी.) व आर्यावर्त केसरी परिवार

हकीम सैयद हुसैन नक़वी

अलबारी दवाखाना

क्या आप इनमें से किसी भयंकर रोग से पीड़ित हैं, तुरंत संपर्क करें

विशेषज्ञ :-
गुर्दा, कैंसर, गुप्त रोग एवं हृदय

नोट :- मस्तिष्क कैंसर रोगी न मिलें

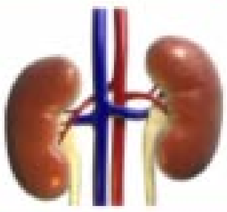

पता :- मोहल्ला लकड़ा, निकट सब्जी मंडी, अमरोहा-244221
मोबा. नं०- 09917358382

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा स्थापित
सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि के सहयोगी महानुभाव

श्री ऋषि कुमार जी
पता : सराय साजन, सिकन्दराबाद (बुलंदशहर)
राशि- १०००/- रुपये

: विशेष :
प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे

घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश
धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी,
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.),
दूर.-05922-262033, चल.- 09758833783 / 08273236003

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

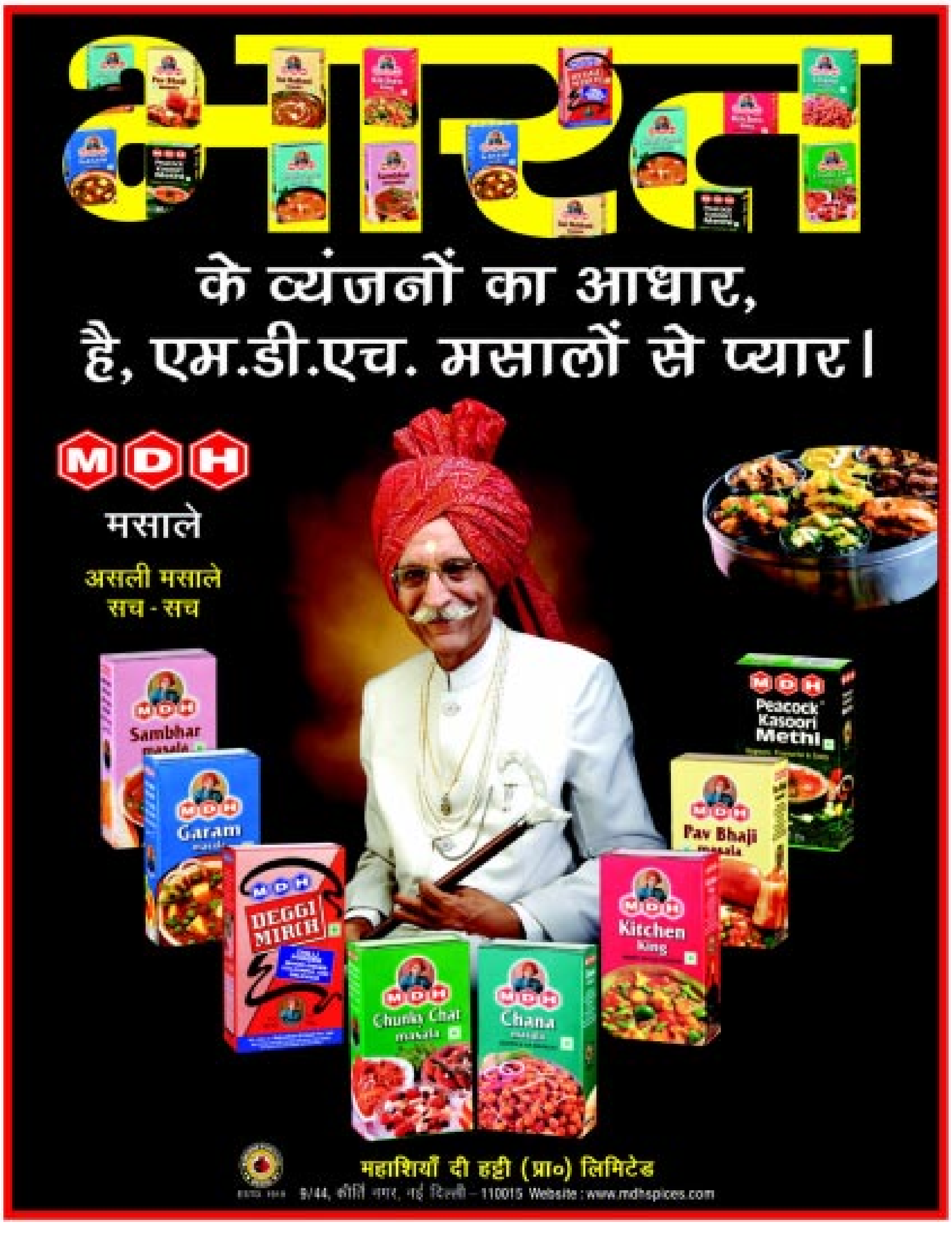

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक',
विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई,
डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी,
इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com